यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे

तथा अन्य प्रवचन

रेडियो प्रोग्राम गाईड

रेडियो श्री लंका से 25 तथा 41 मीटर बेंड पर कार्यक्रम **सत्य-सुसमाचार** सुनिये प्रत्येक :

मंगलवार—रात्री	9.00 से 9.15 तक
बृस्पतिवार—रात्री	9.00 मे 9.15 तक
शुक्रवार—रात्री	9.00 से 9.15 तक
शनीवार—रात्री	9.45 से 10.00 तक

यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे

तथा

अन्य प्रवचन

लेखक :
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला
भाग ६

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स नं० 3815
नई दिल्ली-110049

प्रथम संस्करण, 1978

मुद्रक :
पाइनियर फाईन आर्ट प्रेस,
अजमेरी गेट, दिल्ली-6

परीचय

पिछले कुछ दिनों से हिन्दी में लिखी मसीही पुस्तकों की गिनती लगातार बढ़ रही है। यह वास्तव में बड़ी ही प्रसंशनीय बात है। और जिस व्यक्ति के परिश्रम के फलस्वरूप ये पुस्तकें छपकर तैयार हो रही हैं वे हैं हमारे ही भाई सनी डेविड, जो प्रस्तुत पुस्तक के अतिरिक्त अन्य आठ पुस्तकों के भी लेखक हैं, और जिन्हों ने हमारी कई अंग्रेज़ी की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद करके उनके छपवाने में सहयोग दिया है। हम परमेश्वर का बड़ा ही धन्यवाद करते हैं कि वह भाई डेविड को प्रभु का सुसमाचार फैलाने के लिये बहुतायत से इस्तेमाल कर रहा है।

लेखक की पूर्व लिखित पुस्तकों की तरह, इस पुस्तक में भी आप उनके उन नवीन रेडियो प्रवचनों को पढ़ेंगे, जिन्हें उन्हों ने रेडियो श्रीलंका द्वारा प्रसारण के लिये लिखा, और वे स्वयं ही इनके वक्ता भी हैं। इसमें कोई संदेह नहीं, कि **सत्य-सुसमाचार** रेडियो कार्यक्रम अब बहुत अधिक लोकप्रिय बन चुका है, परन्तु विशेष बात यह है कि यह प्रसारण प्रभु की सेवा में बड़ा ही लाभकारी वा फलदायक सिद्ध हुआ है। इसके द्वारा प्रोत्साहित होकर हजारों लोगों ने बाइबल का अध्ययन करना आरम्भ किया, अनेकों ने प्रभु की आज्ञा मानकर उद्धार प्राप्त किया। और हमारी प्रार्थना है कि प्रभु अपने इस कार्य पर अपनी अशीष बनाए रखे ताकी भविष्य में इसके द्वारा और भी अधिक लोग मसीह यीशु को जानें और उस उद्धार को प्राप्त करें जिसका संदेश इन प्रसारणों द्वारा दिया जा रहा है।

हमारा आपसे अनुरोध है कि आप इन प्रसारणों को ध्यान लगाकर सुनें और अपने मित्र-गणों को भी ऐसा ही करने के लिये प्रोत्साहित करें। इस पुस्तक के अतिरिक्त यदि आप लेखक की अन्य रचनाओं को भी मंगाकर पढ़ने के इच्छुक हों तो अवश्य लिखकर मंगाए। और साथ मैं यह कहना चाहूंगा कि पुस्तकें मंगाते समय यदि आप कुछ डाक टिकट डाक व्यय के लिये साथ भेज दें तो हम आपके धन्यवादी होंगे। किन्तु इन पाठों को बड़े ही ध्यान से पढ़ें और यदि आपके पास बाइबल उपलब्ध है तो पुस्तक में लिखे प्रत्येक विवरण को अपनी बाइबल में दिये विवरण से मिलाएं। यदि इन बातों के सम्बन्ध में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं तो हमें सुचित करें।

इन्हीं शब्दों को कहकर अब मैं सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला में लिखी भाई सनी डेविड की इस नवीं पुस्तक को पढ़ने के लिये आपको निमन्त्रण देता हूं।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

मार्च १, १९७८.

विषय सूची

१.	"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे ?"	९
२.	"मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा ?"	१५
३.	यीशु कौन है ?	२०
४.	"सदा का घर"	२५
५.	"हर एक नहीं"	३१
६.	"जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे अलग न करे"	३७
७.	"परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था"	४३
८.	कोई अपने आपको धोखा न दे	४९
९.	वे क्यों नाश हुए ?	५५
१०.	मूर्खता के कारण	६२
११.	चौकस रहो !	६८
१२.	क्या आप अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये तैयार हैं ?	७४
१३.	पूर्वद्वेष—एक समस्या	८०
१४.	नए नियम की उपासना	८६
१५.	आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता क्यों है	९२

१

"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे?"

मित्रो :

आज हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहां लगभग सभी वस्तुओं का मोल-भाव किया जाता है। किन्तु, किसी भी वस्तु पर कोई भी लागत लगाने से पहले हम उसके महत्त्व को जान लेना आवश्यक समझते हैं। हम किसी भी वस्तु पर कोई लागत नहीं लगाना चाहते यदि वह हमारी दृष्टि में महत्त्व-रहित है। परन्तु यदि वास्तव में देखा जाए तो संसार की प्रत्येक वस्तु महत्त्व-रहित है। क्योंकि मनुष्य इस धरती पर जो कुछ भी जोड़ता व बनाता है एक दिन अवश्य ही उसका अन्त होगा। और चाहे वे वस्तुएं बनी भी रहें, तौभी मनुष्य को उन सबसे क्या लाभ होगा ? क्योंकि मनुष्य तो वास्तव में भोर को बढ़नेवाली घास के समान है, जो भोर को बढ़ती और फूलती है और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है। पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है, "हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं, तौभी उनका घमन्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है. क्योंकि वह जल्द कट जाती है, और हम जाते रहते हैं।" (भजन ९० : १०)। और फिर उपदेशक यूं कहता है, "उस सब

परिश्रम से जिसे मनुष्य धरती पर करता है, उसको क्या लाभ प्राप्त होता है ?" "मनुष्य जो धरती पर मन लगाकर परिश्रम करता है उस से उसको क्या लाभ होता है ? उसके सब दिन तो दुखों से भरे होते हैं, और उसका काम खेद के साथ होता है ।" (सभोपदेशक १:३; २ : २२, २३) ।

इसी कारण पवित्र बाइबल मनुष्यों से कहती है, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है । क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है । और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा ।" (१ यूहन्ना २:१५-१७) ।

और जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने लोगों की ओर फिरकर उनसे यूं कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा ?" (मरकुस ८ : ३६, ३७) ।

वास्तव में, मनुष्य यदि कुछ प्राप्त करना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह अपनी आत्मा को बचा ले । क्योंकि प्रत्येक मनुष्य पापी है और वह पाप के अन्धकार में खोया हुआ है । और एक दिन उसे संसार की प्रत्येक वस्तु से अपना नाता तोड़कर अनन्तकाल में प्रवेश करना है । पवित्र बाइबल कहती है, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए ।" (२ कुरिन्थियों ५ : १०) । और उपदेशक

फिर कहता है, "उस समय चांदी का तार दो टुकड़े हो जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा, और सोते के पास घड़ा फूटेगा, और कुन्ड के पास रहट टूट जाएगा, तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी।" (सभोपदेशक १२ : ६, ७)। चाहे मनुष्य इस सच्चाई को स्वीकार करे या न करे, चाहे वह इस ओर ध्यान दे या न दे, परन्तु यह बात परमेश्वर के वचन के द्वारा निश्चित है कि "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ९ : २७)।

परन्तु बात यह है, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले और न्याय के दिन अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ? क्या मनुष्य के लिये यह उचित नहीं कि वह अपने जीवन के सत्तर या अस्सी वर्ष परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलकर चाहे कष्ट में ही व्यतीत कर ले और अन्त में परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन का वारिस हो ? परन्तु हम कदाचित् इस सच्चाई को स्वीकार करने के विपरीत इसे टाल देना ही उचित समझते हैं। हम सुनकर विश्वास कर लेते हैं कि संसार में एक देश है जिसका नाम चीन है, एक नदी है जिसका नाम यरदन है, एक देश है जिसने मनुष्य को चांद पर भेजा है। परन्तु दूसरी ओर, जब कि परमेश्वर का वचन हम से कुछ कहता है तो हम उस पर विश्वास नहीं करते। यह दिखाता है, कि आज हम परमेश्वर से भी बढ़कर स्वयं अपने आप पर और अन्य लोगों पर कितना अधिक विश्वास रखते हैं ! परन्तु पवित्र वचन का लेखक कहता है, "क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल की नाईं है : घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है, परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा।" (१ पतरस १ : २४, २५)। प्रभु यीशु ने कहा, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।" (मत्ती २४ : ३५)।

सो जब कि प्रभु का वचन हमें बताता है कि प्रत्येक मनुष्य पाप के अन्धकार में खोया हुआ है (रोमियों ३ : २३), और चाहे वह जगत की सारी वस्तुएं क्यों न प्राप्त करले परन्तु यदि वह अपनी आत्मा को हानि उठाए तो उसे कुछ भी लाभ न होगा। तो हमें चाहिए कि हम इस ओर ध्यान दें। क्योंकि मनुष्य की आत्मा जगत की सारी वस्तुओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। जब हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने मनुष्य को पाप के दण्ड से बचाने लिये अपने आपको खाली कर दिया, और अपने एकलौते पुत्र यीशु को हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर बलिदान करवाया; जब हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु ने हमारे पापों को धोने के लिये क्रूस के ऊपर से अपना पवित्र लोहु बहाया, तो हमें चाहिए कि हम अपनी आत्मा के महत्व को समझें। हमें चाहिए कि हम संसार की वस्तुओं की खोज करना छोड़कर अपनी आत्मा को बचाने की चिन्ता करें। क्योंकि यदि हम एक बहुत बड़े धनवान की नाईं मरकर सदा के लिये नरक की आग में पहुंचे, तो हमें क्या लाभ होगा ? परन्तु यदि हम इस संसार की दृष्टि में एक कंगाल की नाईं ही मर जाएं, किन्तु परमेश्वर के राज्य में उसके अनुग्रह से अनन्त जीवन पाएं, तो हमारा आनंद कितना महान होगा !

मित्रो, में चाहता हूं कि इस सम्बंध में आप इस वृत्तांत को ध्यान से सुनें : प्रभु यीशु ने कहा, "एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था, और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उस की ड्योढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद

में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधो-लोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा। और उसने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र, स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके।" (लूका १६ : १९-२६)।

यहां हम देखते हैं, कि एक ओर तो वह मनुष्य था जो संसार में बड़े ही सुख-विलास वा धूम-धाम के साथ रहता था, और दूसरी ओर एक रोगी वा कंगाल मनुष्य था जिसके वस्त्र फटे हुए चिथड़े और भोजन उस धनवान की मेज़ पर से गिरे हुए टुकड़े थे। परन्तु मृत्यु के बाद जब वे दोनों आत्मिक संसार में अपने सदा के घर को पहुंचे, तो उस धनवान को यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि जबकि वह भयंकर ज्वाला में तड़प रहा है, दूसरी ओर कंगाल लाज़र परमेश्वर के लोगों के साथ शांति पा रहा है।

परन्तु, क्या वह धनवान नरक की ज्वाला में इसलिये पहुंचा क्योंकि वह पृथ्वी पर एक धनी मनुष्य था ? या क्या लाज़र स्वर्ग में इसलिये पहुंचा क्योंकि वह संसार में एक कंगाल था ? जी नहीं। क्योंकि स्वर्ग या नरक में कोई मनुष्य केवल धनी या कंगाल होने के फलस्वरूप नहीं पहुंचता। परन्तु जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा, कि अधर्मी अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

(मत्ती २५ : ४६) । किन्तु, कोई मनुष्य इस धोखे में न रहे, कि यदि वह इस जीवन में धनी है तो वह आनेवाले जीवन में भी अवश्य ही धनी होगा । या यदि वह इस जीवन में निर्धन है तो वह आनेवाले जीवन में भी अवश्य ही कंगाल होगा । परन्तु वास्तव में सच्चाई यह है कि सारे अधर्मी अपने अधर्म के कारण नरक की ज्वाला में अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे, और धर्मी अपने धर्म के कारण अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे ।

पवित्र वचन कहता है, "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है ।" (रोमियों ६ : २३) । सो यदि आप यीशु मसीह में हैं तो उसके द्वारा आप धर्मी हैं, और इस कारण अनन्त जीवन के वारिस हैं । परन्तु क्या आप यीशु मसीह में हैं ? यदि आप यीशु में विश्वास करेंगे और अपने पापों से मन फिराकर उसकी अज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे तो वह आपके सारे पापों को क्षसा करेगा और आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा । (प्रेरितों २: ३८) । परमेश्वर अपने वचन पर चलने के लिये आप को शक्ति दे ।

२

"मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा ?"

मित्रो :

हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जहां अनेकों प्रकार की वस्तुएं हमें अपनी ओर आकर्षित करती हैं। परन्तु मनुष्य के लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु स्वयं उसके प्राण हैं। प्रभु यीशु के कथनानुसार, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा ?" (मरकुस ८ : ३६, ३७)। यहां जिन दो बातों को हम विशेष रूप से देखते हैं, वे इस प्रकार हैं, कि एक तो मनुष्य अपने प्राण अर्थात् अपनी आत्मा की हानि उठा सकता है, और दूसरे यह, कि मनुष्य की इस हानि को संसार की किसी भी वस्तु के द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता। सो यदि इस संसार में ऐसी कोई वस्तु है जिसका महत्त्व है, जिसके बारे में हम कह सकते हैं कि वह अमर है अर्थात् वह कभी नाश न होगी, तो वह वस्तु है मनुष्य की आत्मा।

किन्तु, मनुष्य की आत्मा इतनी अधिक महत्वपूर्ण क्यों है ? इस

विषय में सबसे पहिली और मुख्य बात जो हम देखते हैं वह यह है कि आरम्भ में जब परमेश्वर ने सबसे पहिली बार मनुष्य की सृष्टि की तो उसने उसे अपने ही स्वरूप और अपनी समानता पर उत्पन्न किया। पवित्र शास्त्र बताता है, कि आरम्भ में परमेश्वर ने संसार की सारी वस्तुओं की रचना अपने वचन की सामर्थ से करने के बाद मनुष्य की देह को भूमि की मिट्टी से रचा और फिर परमेश्वर ने उसके भीतर अपने जीवन के श्वास को फूंक दिया, और इस प्रकार परमेश्वर से अपने प्राण प्राप्त करके मनुष्य जीवता प्राणी बन गया। (उत्पत्ति १ : २७; २:७)। इसी कारण, मनुष्य की मृत्यु के समय को सम्बोधित करके, पवित्र वचन का लेखक कहता है कि "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया जौट जाएगी।" (सभोपदेशक १२ : ७)।

मनुष्य के प्राणों के महत्त्व को हम इस बात में भी देखते हैं, कि जब मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करके पापी बन गया और इस प्रकार परमेश्वर की ज्योति से दूर होकर पाप के अन्धकार में खो गया, तो परमेश्वर ने उसे ढूंढ़ने और बचाने के लिये अपने सामर्थपूर्ण वचन को देहधारी बनाकर इस संसार में भेजा। इसी कारण पवित्र बाइबल में लिखा है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उस में जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी·····और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १ : १-४, १४)।

और जब वह सामर्थपूर्ण वचन देहधारी होकर परमेश्वर का पुत्र

कहलाया, तो उसने स्वर्ग से पृथ्वी पर आने के अपने उद्देश्य को लोगों को बताकर कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। और, एक और जगह उसने यूं कहा, कि मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया हूं। (लूका १९ : १०)। और वह, परमेश्वर का पुत्र, और हमारा उद्धारकर्त्ता, है प्रभु यीशु मसीह। जिसने हमारे उद्धार को सम्भव करने के लिये, परमेश्वर की योजनानुसार, हमारे पापों के बदले में अपने ऊपर पाप का दंड सहा। पवित्र वचन कहता है कि "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।" (रोमियों ६ : २३)। और परमेश्वर के पुत्र ने इसी मजदूरी को हमारे बदले में ग्रहण किया। वह जो सर्वसिद्ध था; वह जो ज्योति वा पवित्र था, वह जो आदि में परमेश्वर के साथ था, और वह, "जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)।

सो यदि मनुष्य के प्राण परमेश्वर को अपने ही प्राणों जैसे प्रिय न होते, तो क्या वह आपने एकलौते पुत्र को हमें बचाने के लिये इस संसार में मरने को भेज देता? इस बात को ध्यान में रखकर, जो विचार अब हमारे सम्मुख आता है वह यह कि तब मनुष्य कितना अधिक महत्त्वपूर्ण प्राणी है! क्या आप ने कभी इस बात पर गम्भीरता के साथ विचार किया? मैं चाहता हूं कि आप इस बात को देखें, कि आप कितने अधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं, कि आपको बचाने के लिये परश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर भेज दिया। और न केवल यही, परन्तु उसने आपको नरक के अनन्त दन्ड से बचाने के लिये आपका दन्ड भी अपने ऊपर ले लिया। क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया कि मृत्यु के

समय यीशु का इतना भारी निरादर वा अपमान क्यों हुआ और क्यों उसे इतनी अधिक क्रूरता के साथ मारा गया ? हम देखते हैं, कि उसके मुंह पर थूका गया, उसके सिर पर काँटे चुभोए गए, उसकी पीठ को कोड़ों से ज़खमी कर दिया गया, लोग उसे गालियां देते थे और उस पर तरह-तरह के ताने कसते थे। मौत से चन्द ही घन्टे पहिले उसे सड़कों पर गलियों में घुमाया गया, और फिर उन्होंने उसे लेकर एक सूली पर लटका दिया, जहां उसने यह कहकर अपने प्राण छोड़ दिए, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया।" (मत्ती २७ : ४६)।

क्या कभी आपने इस बात पर सोचा कि ये सब क्यों हुआ ? क्यों उसे इतना अधिक अपमानित होना पड़ा ? क्यों उसकी मौत इतनी अधिक दर्दनाक थी ? क्यों दयालू पिता परमेश्वर ने भी अपने एकलौते पुत्र को इस तरह मरने को छोड़ दिया? सुनिए, यदि आप और मैं पापी न होते तो परमेश्वर के पुत्र को इस तरह अपमानित न होना पड़ता, क्योंकि पाप परमेश्वर के निकट अपमानजनक वस्तु है। यदि आप और मैं पापी न होते तो परमेश्वर के एकलौते पुत्र को हमारे पाप की मजदूरी को अपने ऊपर लेने की कोई आवश्यकता न होती, क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है। यदि आप और मैं पापी न होते, तो परमेश्वर अपने एकलौते पुत्र को इस पृथ्वी पर कभी भी न भेजता और न उसे कभी अकेला छोड़ता। परन्तु क्योंकि वह हमारे कारण पापी बनाया गया, क्योंकि परमेश्वर ने हमारे पापों का दोष उस पर लगाया, इस कारण परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया, क्योंकि जहां पाप है वहां परमेश्वर की उपस्थिति असम्भव है।

किन्तु जबकि परमेश्वर आपकी आत्मा के महत्व को जानता है, और जबकि परमेश्वर का एकलौता पुत्र आपकी आत्मा के महत्त्व को

पहिचानता है, प्रश्न यह है, कि आप कितना अधिक अपने महत्त्व को जानते वा पहिचानते हैं? अकसर मनुष्य अमीरी और ग़रीबी के तराज़ू में तौलकर अपने महत्त्व को परखने का प्रयत्न करता है। पृथ्वी पर यदि कोई मनुष्य अधिक धनी है, या अधिक पढ़ा लिखा है, या किसी और तरह की विशेषता अपने भीतर रखता है तो उसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझा जाता है। परन्तु यदि मैं निर्धन हूं, यदि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं, यदि मैं साधारण मनुष्य हूं तो लोगों के बीच में मेरा कोई महत्त्व नहीं। क्या आप इसी तरह से अपने महत्त्व को जांचते हैं ?

परन्तु सुनिये, प्रभु आपके प्राणों के महत्त्व को इस दृष्टिकोण से बिल्कुल भी नहीं देखता। किन्तु वह कहता है, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करे, अर्थात् संसार का सारा धन, सारी विद्या, वा सारी विशेषताएं भी प्राप्त करे और तौभी अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ मिलेगा ? क्या वह अपनी आत्मा को पाप के दन्ड से बचाने के लिये इन में से किसी भी वस्तु को बदले में दे सकेगा ? वास्तव में नहीं। सो फिर मनुष्य के लिये क्या आवश्यक है? यह कि वह संसार का सारा धन, विद्या और विशेषताएं प्राप्त करके अपने प्राणों को नरक में खोए ? या यह कि वह इन सब वस्तुओं की हानि उठाकर प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अपनी आत्मा को बचाए ? कौन सी वस्तु आपके निकट अधिक महत्त्वपूर्ण है ?

मित्रो, मेरी आशा है कि आप अपनी आत्मा के विशाल महत्त्व को देखने का प्रयत्न करेंगे। परमेश्वर चाहता है कि आप उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करें, और अपने पापों से मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लें। परमेश्वर का सदा बना रहनेवाला वचन आपकी आत्मा की अगुवाई करे।

३

यीशु कौन है ?

शताब्दियों से यदि किसी भी मनुष्य ने सम्पूर्ण मानवता पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है, तो वह व्यक्ति है यीशु मसीह। उसका नाम सारे संसार-भर में बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। उसके नाम को ऊंचा उठाने के लिये करोड़ों की संख्या में पुस्तकें और लेख प्रति वर्ष छपकर निकलते हैं। संसार-भर में रेडियो और टेलेवीज़न इत्यादि के माध्यम से उसके नाम का प्रचार बड़े ही ज़ोर-शोर से हो रहा है। प्रतिदिन मेरे पास अनेकों पत्र आते हैं, लोग जानना चाहते हैं, कि यीशु कौन है ? सो आज मैं इसी महत्त्वपूर्ण प्रश्न को दृष्टि में रखकर आपको बताना चाहता हूं कि वास्तव में यीशु कौन है। क्यों हम उसके नाम का प्रचार इतने उत्साह से कर रहे हैं; क्यों हम आप से बार-बार निवेदन करते हैं कि आप उस पर विश्वास लाएं और उसकी आज्ञाओं का पालन करें।

यीशु एक मनुष्य था, जो आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व हमारी ही तरह इस पृथ्वी पर विद्यमान् था। किन्तु उसका जीवन महान् और उसकी शिक्षाएं अद्भुत थीं। उसके महान् जीवन और उकी अद्भुत शिक्षाओं का प्रभाव इतना अधिक शक्तिशाली था कि

उसने लोगों के बीच एक तहलका मचा दिया। फलस्वरूप, उसकी अपनी ही जाति के लोग उसके विरोध में उठ खड़े हुए और उसके शत्रु बन गए। वे उसे पकड़कर उस पर तरह तरह के दोष लगाकर उस के ऊपर मुकदमा चलाना चाहते थे; वे चाहते थे कि उसे मृत्यु दन्ड दिया जाए। सो हम पढ़ते हैं, कि जब वे उसे पकड़कर महा-याजक के सामने लाए, तो महायाजक ने उस से पूछा, कि क्या तू उस परम-धन्य परमेश्वर का पुत्र मसीह है? तब यीशु ने उस से कहा, "हां, मैं हूं।" (मरकुस १४: ६१-६२)। पृथ्वी पर अपने सम्पूर्ण कार्य-काल में यीशु ने कई जगह इस बात पर बल देकर व्यक्त किया, कि वह परमेश्वर का पुत्र है। एक जगह उसने पृथ्वी पर अपने आने के उद्देश्य को प्रगट करके कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३: १६)। बाइबल में नए नियम की पहिली चार पुस्तकों में हम पढ़ते हैं, कि यीशु ने अनेकों स्थानों पर अपने बारे में बताकर कहा कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। सो मैं आपके सामने इस बात को रखता हूं, कि या तो यीशु वास्तव में वही था जो उसने अपने बारे में कहा कि मैं हूं, या फिर वह इस संसार में आज तक होनेवाले झूठे और मक्कार व्यक्तियों में से एक सब से बड़ा झूठा और मक्कार व्यक्ति था। आप यीशु को केवल एक अच्छा व्यक्ति या एक अच्छा शिक्षक ही नहीं मान सकते। या तो वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था, या फिर वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने संसार के इतिहास में एक सबसे बड़ा झूठा दावा किया।

किन्तु, इतिहास इस बात का साक्षी है कि यीशु ने अपने जीवन-काल में पृथ्वी पर बड़े-बड़े आश्चर्यपूर्ण और अद्भुत काम किए। वे

जो कोढ़ी थे, अन्धे, लंगड़े, लूले और अपाहिज थे, वे जो दुष्टात्माओं से जकड़े हुए थे, और तरह-तरह की अन्य ला-ईलाज बीमारियों से परेशान थे, उसके हल्के से छू लेने भर से हमेशा के लिये चंगे हो जाते थे। वे जिन्होंने कभी देखा नहीं था, देखने लगे; जिन्हों ने कभी बोला नहीं था, बोलने लगे। उसकी नम्रता भरी आवाज़ में इतनी ताकत थी, कि उसकी आवाज़ सुनकर मृतक समान रोगी भी अपना बिस्तर उठाकर चलने लगते थे, उसकी आवाज़ सुनकर मुर्दे भी जी उठते थे। क्या वह व्यक्ति, यीशु, इन सब कामों को कर सकता था, यदि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र नहीं था ?

फिर, हम यह भी देखते हैं कि पवित्र शास्त्र में परमेश्वर ने अनेकों भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा प्रगट करके बताया था कि किस प्रकार वह अपने पुत्र को संसार में भेजेगा, और उस पवित्र जन के क्रूस के ऊपर बलिदान के कारण सारी मानव जाति का उद्धार होगा। यीशु के जन्म से सैंकड़ों वर्ष पूर्व, भविष्यद्वक्ता ने बताया था कि किस प्रकार परमेश्वर का पुत्र हमारा उद्धारकर्त्ता बनकर इस पृथ्वी पर आएगा, वह किस प्रकार तुच्छ जाना जाएगा, और किस तरह से उस पर अत्याचार होगा, और फिर किस प्रकार वह संपूर्ण मानव जाति के पापों के कारण सूली के ऊपर लटकाया जाएगा, ताकि हमारे पापों का दन्ड प्राप्त करे, और हमें मुक्ति मिल जाए। (यशायाह ५३)। और मित्रो, ये सारी की सारी बातें बिल्कुल ऐसे ही प्रभु यीशु के जीवन में पूरी हुईं। नए नियम की पहिली चार पुस्तकों में, अर्थात् मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना नामक पुस्तकों में हम इन बातों के बारे में पूरे विस्तार से पढ़ते हैं। ये सब कैसे हुआ ? यदि वास्तव में यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं था तो ये सब बातें उस में क्योंकर पूरी हुईं ?

और निःसंदेह, यीशु की शिक्षाएं बेजोड़ और बेमिसाल थीं,

अर्थात् उसकी शिक्षाओं की तुलना किसी अन्य मनुष्य की शिक्षाओं से नहीं की जा सकती। शताब्दियों से उसकी शिक्षाओं का मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पहलू पर बहुत बड़ा प्रभाव रहा है। उदाहरण के रूप से, मत्ती की पुस्तक के ५, ६, और ७ अध्यायों में जिन अनोखी वा उत्तम शिक्षाओं को हम पढ़ते हैं, जिन्हें आज हम "पहाड़ी उपदेश" के नाम से जानते हैं, क्या इन शिक्षाओं की तुलना पृथ्वी पर किसी अन्य मनुष्य की शिक्षाओं से की जा सकती है? सो मैं आप से पूछता हूं, कि यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं था तो उसकी शिक्षाओं में इतने अधिक निरालेपन का और क्या कारण था?

और केवल यही नहीं, किन्तु अपनी मृत्यु के कुछ ही समय पूर्व यीशु ने इस बात को प्रत्यक्ष में प्रगट करके कहा था कि वह अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन पुनः जी उठेगा। और जब वह मर गया तो उसके शत्रुओं ने उसके इस दावे को झूठा ठहराने के दृष्टिकोण से उस की कब्र पर कड़ा पहरा बैठा दिया। किन्तु परमेश्वर की सामर्थ के सामने संसार की संपूर्ण शक्ति निर्बल है। और यीशु अपने कहे अनुसार सचमुच में मुर्दों में से जी उठा। अब शायद कोई कहे कि मैं इस बात को प्रमाणित करुं। परन्तु मैं कहता हूं, कि क्या आप इस बात को गलत प्रमाणित कर सकते हैं? यीशु यदि वास्तव में मुर्दों में से नहीं जी उठा, तो क्यों नहीं उसके विरोधी यहूदियों ने और शक्तिशाली रोमी सरकार ने, जिसके अधिकार से उसे मृत्यु दन्ड दिया गया था, उसकी मरी हुई देह को लाकर सबके सामने प्रस्तुत कर दिया? यह काम उन सबके लिये बिल्कुल आसान था, और जिसके द्वारा वे सदा के लिये यीशु के जी उठने की कथा को असत्य वा झूठा प्रमाणित कर सकते। परन्तु यह उनके लिये बिल्कुल असम्भव था। क्योंकि यीशु की देह उस कब्र में नहीं थी। किन्तु, यीशु किस तरह जी उठा? किस प्रकार वह उन शक्तिशाली रोमी सिपाहियों के सामने से निकलकर

चला गया जो उसकी कब्र पर पहरा दे रहे थे ? यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र नहीं था, तो यह बात वास्तव में सम्भव नहीं थी । किन्तु, हमारे पास उन लोगों की सच्ची गवाही लिखित रूप में विद्यमान् है जिन्होंने जी उठने के बाद यीशु को अपनी आंखों से देखा । एक जगह हम पढ़ते हैं, कि यीशु की मृत्यु के बाद पांच सौ से भी अधिक लोगों ने यीशु को देखा ।

क्या इन सब बातों को ध्यान में रखकर भी यह स्वीकार करना अनुचित होगा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है ? मेरा विश्वास है, कि आप यह स्वीकार करेंगे और इस बात पर विश्वास करेंगे, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में भेजा ताकि वह हमारे पापों के कारण मारा जाए, और हम उसके बलिदान के द्वारा उद्धार पाएं ।

यदि आप यीशु के बलिदान के द्वारा धर्मी ठहरकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि आप उस में विश्वास करें, और अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये उसकी आज्ञाओं का पालन करें । उसकी इच्छा है कि आप पापों से अपना मन फिराएं और जल के भीतर दफ़न होकर, अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें । (मरकुस १६ : १६) ।

जबकि अब हम अपने इस पाठ का अंत करते हैं, मेरी आशा है कि आप अपने जीवन में यीशु की आवश्यकता को अनुभव करेंगे, क्योंकि वह आपसे प्रेम करता है, और उसने आपको बचाने के लिये स्वयं अपने आपको दे दिया । क्या आप उस पर विश्वास नहीं लाएंगे ? क्या आप उसकी आज्ञाओं को नहीं मानेंगे ?

४

"सदा का घर"

मित्रो :

मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं कि उस ने हमें यह एक और सुन्दर अवसर दिया है कि हम उसके वचन पर ध्यान लगाएं। वास्तव में हमारा स्वर्गीय पिता कितना भला है, कि उसने हमें पृथ्वी पर अन्धकार में भटकने को नहीं छोड़ दिया, परन्तु उसने अपना वचन हमें दिया है, जो हमारे पांव के लिये दीपक और हमारे मार्ग के लिए उजियाला है। (भजन ११९:१०५)। उसका वचन हमें बताता है, कि हमें उसकी आवश्यकता है, वह हम से प्रेम करता है, और वह हमें पाप के अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने ज्योति के राज्य में प्रवेश दिलाना चाहता है। उसका वचन हमें बताता है कि इस पृथ्वी पर हमारे जीवनों का उद्देश्य क्या है। क्योंकि यह पृथ्वी हमारा सदा का घर नहीं है, परन्तु वास्तव में हम सब यहां एक यात्री के समान हैं। कई बार हम संसार की वस्तुओं के मोह में फंसकर अपने जीवन के सच्चे उद्देश्य को भूल जाते हैं, हम भूल जाते हैं कि यह पृथ्वी हमारा सदा का घर नहीं है, हम भूल जाते हैं कि हम सब के जीवनों में वह समय आनेवाला है जबकि मनुष्य अपने

सदा के घर को जाएगा। (सभोपदेशक १२ : ५)।

प्रेरित पौलुस कहता है, "क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है।" (२ कुरिन्थियों ५ : १)। प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनःरुत्थान और स्वर्ग में वापस जाने से पहिले, अपने चेलों को व्याकुल देखकर उन से कहा, "तुम्हारा मन न घबराए, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं। यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहीं तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४ : १-३)।

परन्तु प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के अनन्त राज्य का वारिस न होगा। क्योंकि पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन की यात्रा को समाप्त करके परमेश्वर द्वारा निश्चित दो स्थानों में से केवल एक ही स्थान के भीतर सदा के लिये प्रवेश करेगा। प्रभु यीशु ने कहा, कि अधर्मी "अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती २५ : ४६)।

परन्तु अनन्त जीवन, अर्थात् स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिये मनुष्य के भीतर एक दृढ़ इच्छा वा निश्चय का होना बड़ा ही आवश्यक है। इस प्रकार की इच्छा वा दृढ़ निश्चय को हम इब्राहीम के जीवन में देखते हैं। वह वहां पहुंचने के लिये अपने निश्चय में इतना दृढ़ था, कि उसने अपनी प्रत्येक उस इच्छा को जो परमेश्वर की इच्छा के सामने आती थी, बलिदान कर दिया। उस ने परमेश्वर की किसी भी

आज्ञा को कभी ना न कहा। लिखा है, "क्योंकि वह उस स्थिर नेव-वाले नगर की बाट जोहता था, जिस का रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।" (इब्रानियों ११ : १०)। स्वर्गीय नगर में प्रवेश करने की इसी प्रकार की प्रबल इच्छा को हम प्रेरित पौलुस के जीवन में भी देखते हैं। उस ने कहा, "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है।" (फिलिप्पियों १ : २१, २३)। वास्तव में, वह जानता था कि उसने प्रभु की इच्छा पूरी की है, और इस कारण वह अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करके अब बड़ी ही लालसा से उस घड़ी की बाट जोह रहा था जब कि वह अपने सदा के घर में प्रवेश करेगा। सो एक जगह हम पढ़ते हैं, कि उसने अपने एक युवा साथी प्रचारक को लिखकर यूं कहा, "पर तू सब बातों में सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर। क्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं वरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमु० ४ : ५-८)। मित्रो, क्या आप के पास अपने सदा के घर को जाने की ऐसी प्रबल इच्छा है? परन्तु प्रेरित पौलुस के पास केवल एक दृढ़ इच्छा ही नहीं थी, किन्तु उस ने कहा, कि मैं ने विश्वास की रखवाली की है, अर्थात् मैं ने परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को माना है। उस ने कहा कि मैं ने संसार से लड़ाई लड़ी है और अपनी दौड़ को पूरा किया है। वास्तव में, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने की इच्छा ही करना

काफ़ी नहीं है, किन्तु हमारी इच्छा इतनी प्रबल वा दृढ़ होनी चाहिए कि हम संसार की हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने का यत्न करें। (इब्रानियों १२:१)। प्रभु यीशु ने इसी बात पर बल देकर एक जगह यूं कहा, "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।" (लूका १३:२४)।

इस विषय में दो बातें बड़ी ही विशेष हैं, और मैं समझता हूं कि उनका यहाँ उल्लेख करना बड़ा ही आवश्यक है। सबसे पहिली बात तो यह है, कि हमें अपने आप में से बाहर निकलना है, अर्थात् हमें अपने आप का इन्कार करना है। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती १६ : २४)। इसका अर्थ यह है, कि यदि हमारे जीवन में कोई भी ऐसी वस्तु है जिसे हम स्वर्ग के राज्य से बढ़कर प्रिय जानते हैं, तो उसे हम अपने जीवनों में से निकालकर परे फेंक दें। क्योंकि हम परमेश्वर के राज्य में अपनी इच्छानुसार नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छानुसार ही प्रवेश कर सकते हैं। पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? "वह कहता है, "धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६ : ९, १०)।

इसीलिये, प्रभु यीशु ने एक जगह कहा कि "यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर फेंक दे; टुन्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। और यदि तेरी

आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे। काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए।" (मत्ती १८: ८-१०)। सो हमें अपने आप का इन्कार करना है। हमें इस बात का निश्चय करना है, कि क्या हम अपनी इच्छा पर चलकर नरक की आग में सदा के लिये प्रवेश करना चाहते हैं, या हम परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं।

दूसरी विशेष बात यह है, कि हमें अपने आप में से निकलकर यीशु मसीह के भीतर आना है। क्योंकि उसके बाहर रहकर हम कभी भी अपने सदा के स्वर्गीय घर तक नहीं पहुंच सकते। क्योंकि वह कहता है, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४: ६)। और मसीह के भीतर आने के लिये, प्रेरित पौलुस कहता है, कि हम उस में बपतिस्मा लेते हैं। गलतियों ३: २७ में वह कहता है, "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।" परन्तु मसीह में बपतिस्मा लेने से पहिले यह आवश्यक है कि मनुष्य उस में विश्वास करे, और अपने पापों से पश्चात्ताप करे। और मसीह के भीतर आने के बाद उसे चाहिए कि वह उस में बना रहे। क्योंकि प्रभु ने कहा, "यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है।" (यूहन्ना १५: ६)।

मित्रो, मेरी आशा और परमेश्वर से प्रार्थना है कि आप अपने जीवन के उद्देश्य को भली-भांति समझें। पवित्रशास्त्र का लेखक कहता है, कि इस पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन का एकमात्र उद्देश्य यह है "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि

मनष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२ : १३, १४)। परमेश्वर आपको आशीष और समझ वा बुद्धि दे ताकि आप उसके राज्य के योग्य ठहरें।

५

"हर एक नहीं"

यद्यपि परमेश्वर नहीं चाहता कि संसार में कोई भी मनुष्य नाश हो, और इसीलिये हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने संसार के सारे लोगों से ऐसा प्रेम रखा कि उसने मनुष्य को पाप में नाश होने से बचाने लिये अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेजकर उसको क्रूस पर हर एक मनुष्य के पाप के कारण दण्डित किया, ताकि पापी मनुष्य का उद्धार हो। परन्तु तौभी हम देखते हैं, कि हर एक मनुष्य का उद्धार न होगा। ऐसा इसलिए सच है, क्योंकि परमेश्वर तो मनुष्य के उद्धार के काम को पूरा कर चुका है, परन्तु यह मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह उस उद्धार को परमेश्वर की इच्छानुसार स्वीकार करे। परन्तु क्योंकि हर एक मनुष्य ऐसा नहीं करता, इसलिए परमेश्वर के राज्य में हर एक मनुष्य प्रवेश न कर सकेगा।

प्रभु यीशु ने कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७ : १३-१४)। यहां हम देखते

हैं, कि प्रभु ने कहा, कि जबकि विनाश को पहुंचानेवाले चौड़े फाटक के भीतर बहुतेरे प्रवेश करेंगे परन्तु बहुत ही थोड़े लोग उस संकेत फाटक के भीतर प्रवेश पाएंगे जो जीवन को पहुंचाता है। क्योंकि प्रभु ने कहा, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७:२१)।

सो, विनाश को पहुंचानेवाले चौड़े फाटक के भीतर किस प्रकार के लोग प्रवेश करेंगे ? वे, जो केवल हे प्रभु, हे प्रभु ही कहते हैं। अर्थात् वे जो गले में एक क्रूस पहिनकर ही अपने आप को स्वर्ग के राज्य के योग्य समझते हैं; वे जो साल में एक दो त्योहार मनाकर या अपने ऊपर केवल मसीही नाम रखकर ही, या निरी प्रार्थनाओं के द्वारा ही अपने आपको स्वर्ग के राज्य के योग्य बनाने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे लोग, प्रभु ने कहा, स्वर्ग के राज्य में कदापी प्रवेश न करेंगे। उस ने कहा, "कि ये लोग होंठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती १५ : ८, ९)।

सो हर एक मनुष्य जो अपने आपको धार्मिक समझता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा। परन्तु केवल वही प्रवेश करेगा, प्रभु ने कहा, जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है। प्रभु यीशु के बारे में हम पढ़ते हैं कि "पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों ५ : ८, ९)। सो यद्यपी यीशु परमेश्वर का पुत्र था, और उस में कोई पाप न था, उसे स्वयं उद्धार की आवश्यकता न थी, परन्तु तौभी हमारे उद्धार के कारण

उन ने दुख उठा-उठाकर परमेश्वर की आज्ञाओं को माना, और इस प्रकार वह सिद्ध हो गया, और इस कारण वह हम सब का उद्धारकर्त्ता बन गया। परन्तु किन सब का ? उनका जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। और जब हम प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानते हैं, तो हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं, क्योंकि यीशु ने कहा, कि जो कुछ मैं आज्ञा देता हूं या करता हूं वह सब परमेश्वर की ओर से है। (यूहन्ना ५ : ३०)। सो हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा।

और इसी तरह, हम यह भी देखते हैं, कि हर एक मनुष्य की प्रार्थना प्रभु स्वीकार नहीं करता। प्रभु से हे प्रभु, हे प्रभु, कहकर प्रार्थना करना ही काफ़ी नहीं है, परन्तु उसकी आज्ञाओं पर चलना आवश्यक है। बाइबल का एक लेखक, यूं कहता है, "और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता है; क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।" (१ यूहन्ना ३ : २२)। सो कब परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनकर उनका उत्तर देता है ? जब हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; जब हम केवल वही करते हैं जो उसे भाता है। परन्तु हर एक मनुष्य ऐसा नहीं करता। और इसीलिये परमेश्वर हर एक मनुष्य की प्रार्थना नहीं सुनता। सो इस से पहिले, कि हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने आकर उस से कुछ मांगे, हमें चाहिए कि हम अपने जीवनों को टटोलें और अपने मनों को जाचें और देखें कि क्या हमने प्रभु की आज्ञाओं को माना है।

फिर, हम देखते हैं, कि यद्यपि बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से लिखनेवाला यूं कहता है, "यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उस से क्या लाभ ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है ?.....निदान, जैसे कि देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।"

(याकूब २ : १४, २६)। सो जबकि कर्म ही विश्वास को सिद्ध करता है, परन्तु तौभी हर एक भले काम करनेवाला भी स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा। एक जगह प्रभु यीशु ने अपने समय के शास्त्रियों और फरीसियों को सम्बोधित करके उनसे यूं कहा, "हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ़ और जीरे का दसवां अंश तो देते हो, परन्तु तुमने व्यवस्था की गम्भीर बातों को, अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को, छोड़ दिया है; चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। हे अन्धे अगुओ, तुम मच्छड़ को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो। हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो मांजते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर असंयम से भरे हुए हैं।" (मत्ती २३ : २३, २५)।

एक बहुत बड़ा पाठ जो हम यहाँ से सीखते हैं वह यह है, कि हम प्रभु की आज्ञाओं को केवल ऊपर-ऊपर से दिखाने के लिये ही, या अपने आपको केवल धर्मी ठहराने के लिये ही न मानें, परन्तु सच्चाई से और ईमानदारी से उसकी हर एक आज्ञा का पालन करें। उन शास्त्रियों और फरीसियों की तरह नहीं जो केवल छोटी-छोटी सरल प्रतीत होनेवाली आज्ञाओं को तो मान लेते थे, परन्तु परमेश्वर की अन्य आज्ञाओं पर वे कोई ध्यान नहीं देते थे। स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये हमें परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना आवश्यक है। परन्तु उन लोगों की नाईं नहीं, जो मच्छड़ समान छोटी-छोटी लगनेवाली आज्ञाओं को तो छान-बीनकर मानने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु ऊंट समान प्रतीत होनेवाली प्रभु की बड़ी-बड़ी आज्ञाओं को साबुत ही निगल जाते हैं। ऐसे लोग स्वर्ग के राज्य को कदापि देख न पाएंगे। प्रभु यीशु ने इसीलिये एक जगह और चेतावनी देकर यूं कहा, "सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये

अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।" (मत्ती ६ : १)। सो जबकि धर्म के काम करना, अर्थात् परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना बड़ा ही आवश्यक है, किन्तु तौभी हर एक काम करनेवाला स्वर्ग के द्वार के भीतर प्रवेश न करेगा। क्योंकि बहुतेरे अपने धर्म के काम केवल लोगों को दिखाने के लिये ही करते हैं; बहुतेरे उसकी आज्ञाओं को मानते तो हैं, परन्तु केवल तभी तक जब तक कि उसकी आज्ञाएं उन्हें मच्छड़ समान हल्की वा छोटी प्रतीत होती हैं। परन्तु जब उसकी कुछ आज्ञाएं उन्हें ऊंट समान भारी व लम्बी लगने लगती हैं, तो वे उन्हें नहीं मानते।

सो जैसे कि हमने अपने पाठ से देखा, कि हर-एक का उद्धार न होगा, और हर एक स्वर्ग के द्वार के भीतर प्रवेश न करेगा, और हर एक को परमेश्वर की ओर से अपनी प्रार्थना का उत्तर न मिलेगा, और परमेश्वर हर एक के कामों से प्रसन्न न होगा। परन्तु कुछ बातें ऐसी हैं, जिनके बारे में लिखा है, कि हर एक उनमें शामिल होगा। प्रभु यीशु ने कहा, कि न्याय के दिन हर एक मनुष्य जी उठेगा, "जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे, और जिन्हों ने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुस्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५ : २९)। और फिर प्रेरित पौलुस हमें यह कहकर याद दिलाता है कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी।" और फिर वह आगे कहता है, "सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा।" (रोमियों १४:११-१२)। पवित्र वचन आगे कहता है, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५ : १०)।

सो इन सभी बातों को ध्यान में रखकर हमें चाहिए कि हम में से हर एक अपने आप को जाँचे और देखे कि धार्मिक दृष्टिकोण से आज मैं कहां हूं ? क्या मैं वास्तव में सकड़े मार्ग पर चलकर सकेत द्वार के भीतर प्रवेश पाने का प्रयत्न कर रहा हूं ? क्या मैं प्रभु की हर एक आज्ञा को मानने का प्रयत्न कर रहा हूं ? हमें चाहिए कि हम में से प्रत्येक पूरी गम्भीरता के साथ इस प्रश्न पर विचार करे, कि क्या मैं जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठूंगा ? क्या मैं वास्तव में स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करूंगा ?

मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं, मित्रो, कि पवित्र बाइबल कहती है कि जो मनुष्य प्रभु यीशु पर विश्वास करेगा और अपने पापों से मन फिराएगा, और पापों की क्षमा के लिये प्रभु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेगा, और फिर प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलेगा, अर्थात् उसके प्रति विश्वासी बना रहेगा, तो वह अपना प्रति-फल कभी न खोएगा। परन्तु स्वर्ग के राज्य में आदर के साथ प्रवेश करेगा और अनन्त जीवन के उस मुकुट का वारिस होगा जो कभी न मुरझाएगा। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८; मरकुस ८ : ३४, ३५; १ कुरिन्थियों ९:२५; प्रकाशितवाक्य २:१० तथा २२:१७)।

६

"जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे"

मित्रो :

आइए, परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए अब हम अपना ध्यान उसके वचन की ओर लगाएं। हमारे आज के पाठ का विषय होगा, "जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।" अपने पाठ के इस विषय को हमने मत्ती रचित सुसमाचार के १९ अध्याय में से लिया है, जहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "तब फ़रीसी उसकी परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है ?" तब यीशु ने उन्हें उत्तर देकर कहा, "क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे ? सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं : इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।"

यहां हम देखते हैं, कि प्रभु यीशु विशेष रूप से उन लोगों के प्रश्न

का उत्तर दे रहा था जो विवाह और त्यागपत्र के बारे में उस से पूछ रहे थे। परन्तु प्रभु के ये शब्द कि "जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे" बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। और क्योंकि प्रभु ने कहा कि "जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है" इसलिये यह चेतावनी न केवल विवाह तक ही सीमित है, परन्तु प्रत्येक उस वस्तु से सम्बन्ध रखती है जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है। सो, आइए, देखें, कि परमेश्वर ने किन-किन वस्तुओं को आपस में जोड़ा है। और याद रखें, कि जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।

सबसे पहिले हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को अपने साथ जोड़ा है। अर्थात् यीशु मसीह और परमेश्वर दोनों एक हैं। इस विषय में पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि प्रभु यीशु के पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में प्रगट होने से पहिले वह वचन के रूप में परमेश्वर के साथ आदि से विद्यमान था। अर्थात्, लिखा है कि "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था। और वचन परमेश्वर था।" और फिर हम पढ़ते हैं, कि वह "वचन देहधारी, हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १ : १, २, १४)। सो वचन, जो आदि में परमेश्वर के साथ था, और जो स्वयं परमेश्वर था, वही हमारा उद्धारकर्त्ता बनकर मनुष्य के रूप में हम पर प्रगट हुआ। इसी कारण, एक जगह हम देखते हैं, कि जब यीशु के एक चेले ने उस से कहा, कि प्रभु, पिता को हमें दिखा दे। तो यीशु ने उस से कहा कि "मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता ? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है।" (यूहन्ना १४ : ८-९)। निःसंदेह, प्रभु यीशु और परमेश्वर एक हैं। सो जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है,

उसे कोई मनुष्य अलग न करे।

फिर हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने विश्वास के साथ बपतिस्मे को जोड़ा है। यद्यपि विश्वास का स्थान मनुष्य के उद्धार के विषय में सर्वप्रथम है, परन्तु तौभी उद्धार के लिये केवल विश्वास ही पर्याप्त नहीं है। (याकूब २ : २६)। क्योंकि परमेश्वर ने उद्धार से पहिले विश्वास के साथ बपतिस्मे को भी रखा है। अर्थात्, हम पढ़ते हैं कि मरकुस १६ : १६ में प्रभु ने कहा, कि उद्धार उसी का होगा जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा। और न केवल परमेश्वर ने उद्धार के विषय में विश्वास के साथ बपतिस्मे को ही जोड़ा है, परन्तु परमेश्वर ने बपतिस्मे के साथ मनफिराव को भी जोड़ा है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के दूसरे अध्याय में हम देखते हैं, कि जब विश्वासियों की एक बड़ी भीड़ ने यीशु के प्रेरितों से पूछा, कि हम उद्धार पाने के लिये क्या करें ? तो उन्होंने कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ : ३८)। सो इसलिये, यदि कोई उद्धार पाना चाहे तो उसे चाहिए कि वह यीशु मसीह पर विश्वास करे, और पाप से अपना मन फिराए, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। यह प्रभु की आज्ञा है। और जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे अनुष्य अलग न करे।

इसी तरह, परमेश्वर ने उन लोगों को जिनका उद्धार होता है कलीसिया के साथ जोड़ा है। अर्थात्, जिनका प्रभु उद्धार करता है, उन्हें वह उसी समय अपनी कलीसिया में मिला लेता है। प्रभु की कलीसिया उसकी मंडली है। यह मंडली उन लोगों से संगठित है जिन्हों ने उद्धार पाने के लिये प्रभु पर विश्वास किया है और अपना

मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लिया है। पवित्र बाइबल हमें बताती है कि जिन लोगों का उद्धार होता है उन्हें प्रभु प्रति दिन अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों २ : ४७)। अर्थात्, यह असम्भव है कि किसी व्यक्ति का उद्धार हुआ हो परन्तु वह प्रभु की कलीसिया का सदस्य न हो। किन्तु, वास्तव में, जैसा कि अभी हमने देखा, कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये लिया जाता है, और एक अन्य स्थान पर बाइबल हमें बताती है कि हम सब जो बपतिस्मा लेते हैं तो एक ही देह में शामिल होने के लिये बपतिस्मा लेते हैं। और वह देह, पवित्र बाइबल के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया है। (१ कुरिन्थियों १२ : १३; इफिसियों १ : २२, २३)। सो यदि मेरा उद्धार हुआ है, तो मैं प्रभु की कलीसिया में हूं, और यदि मैं मसीह की कलीसिया में हूं तो निश्चित ही मेरा उद्धार हुआ है। अर्थात्, हम इन दोनों बातों को अलग नहीं कर सकते, क्योंकि इन्हें परमेश्वर ने जोड़ा है।

फिर हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने मसीह और कलीसिया को जोड़ा है। अर्थात्, कलीसिया मसीह के बिना मुर्दा है। इस विषय में सबसे पहिली बात हम यह देखते हैं कि कलीसिया मसीह की देह है। सो हम इफिसियों १ : २२, २३ में यूं पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने सब कुछ मसीह के पावों तले कर दिया "और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, **यह उसकी देह है**, और उसकी परिपूर्णता है।" और न केवल हम यही देखते हैं कि कलीसिया मसीह की देह है, परन्तु बाइबल हमें यह भी बताती है कि मसीह कलीसिया का सिर है। लिखा है, "और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।" (कुलुस्सियों १ : १८)।

सो जबकि कलीसिया मसीह की देह है, और मसीह कलीसिया

का सिर है, तो क्या हम कलीसिया को मसीह से अलग कर सकते हैं ? कदापि नहीं। यही कारण है कि मसीह की देह को मसीह के नाम से ही कहलाना चाहिए, अर्थात्, मसीह की कलीसिया। सो यदि कोई मसीह की देह को किसी अन्य नाम से पुकारता है, तो वह कलीसिया को मसीह से अलग करता है। किन्तु जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे कोई मनुष्य अलग न करे।

इसी प्रकार, परमेश्वर ने मसीही जीवन और अनन्त जीवन को भी जोड़ा है। अर्थात्, कोई भी मनुष्य मसीही जीवन व्यतीत किए बिना अनन्त जीवन में प्रवेश नहीं कर सकता। किन्तु मसीही जीवन का फाटक सकेत है और उसका मार्ग सकरा है, इस कारण उस में प्रवेश करना और उस पर चलना कठिन है। प्रभु यीशु ने कहा, "क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७ : १४)। परन्तु उस ने यह भी कहा कि "प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।" (प्रकाशितवाक्य २ : १०)।

अकसर बहुतेरे लोग अनन्त जीवन में प्रवेश करने की लालसा तो अपने मन में अवश्य रखते हैं, परन्तु वे मसीही जीवन को कोई महत्त्व नहीं देते। किन्तु प्रभु यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। सो यदि हम अन्नत जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, तो इस से पूर्व हमें मसीही जीवन में प्रवेश करना आवश्यक है, क्योंकि परमेश्वर ने मसीही जीवन को अनन्त जीवन के साथ जोड़ा है।

क्या आप अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं ? पवित्र बाइबल कहती है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना

एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। यदि आप यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे और अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये उसकी आज्ञा मानेंगे तो वह आपका उद्धार करेगा। "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों ६:२३)। उसी की महिमा युगानुयुग तक होती रहे।

७

"परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था"

मित्रो :

आज अपने पाठ का आरम्भ हम मत्ती रचित सुसमाचार की पुस्तक के १९ वें अध्याय में से इन आयतों को पढ़कर करेंगे, जहां हम यूं पढ़ते हैं, "जब यीशु ये बातें कह चुका, तो गलील से चला गया; और यहूदिया के देश में यरदन के पार आया। और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उसने उन्हें वहां चंगा किया। तब फ़रीसी उस की परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है ? उस ने उत्तर दिया, क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे ? सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं : इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। उन्हों ने उस से कहा, फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे ? उस ने उन से कहा, मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी

को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था।" (मत्ती १९ : १-८)।

यहां हम देखते हैं, कि कुछ लोग जो कि मूसा की व्यवस्था के आधीन रहते थे प्रभु यीशु के पास आकर उस से यह जानना चाहते थे, कि क्या विवाह के बाद अपनी पत्नी को त्यागना उचित है। और जब प्रभु यीशु ने उन से कहा, कि ऐसा करना परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है। तो उन्हों ने मूसा का उदाहरण देकर कहा, कि फिर मूसा ने लोगों को ऐसा करने की आज्ञा क्यों दी ? इस पर प्रभु यीशु ने उन से कहा, कि मूसा ने तुम्हारे मन की ढिठाई के कारण तुम्हें ऐसा करने की छूट दी, परन्तु वास्तव में आरम्भ से ऐसा नहीं था !

किन्तु आज धार्मिक दृष्टिकोण से अनेकों अन्य ऐसी बातें काम में लाई जा रही हैं जो वास्तव में परमेश्वर के वचन के विरुद्ध या अतिरिक्त हैं, और उनके बारे में यह कहना बिल्कुल उचित होगा, **कि आरम्भ से ऐसा नहीं था**। और आज मैं आपको कुछ ऐसी ही बातों के बारे में बताने जा रहा हूं, जिन्हें आज आम तौर से बाइबल की सच्चाई मानकर स्वीकार कर लिया गया है, परन्तु वास्तव में हकीकत यह है कि उनका प्रचलन लोगों के मनों की ढिठाई वा कठोरता के कारण बाद में हुआ। परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था !

आज एक बड़ी ही प्रचलित शिक्षा यह है कि यीशु मसीह पर केवल मानसिक रूप से विश्वास ले आने से ही मनुष्य का उद्धार हो जाता है। परन्तु बाइबल कहती है कि "जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" (याकूब २ : २६)। सो यदि कोई यह मानता है कि उसका उद्धार केवल विश्वास के द्वारा हो सकता है तो वह एक मृर्दा विश्वास से उद्धार पाने की आशा

रखता है। परन्तु बाइबल फिर कहती है कि "यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उस से क्या लाभ ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है ?" (याकूब २ : १४)। वास्तव में, केवल विश्वास से उद्धार प्राप्त करने की शिक्षा का आरम्भ कुछ ऐसे लोगों के द्वारा हुआ जिन्हों ने उद्धार से सम्बन्धित प्रभु की कुछ स्पष्ट शिक्षाओं, अर्थात् पश्चात्ताप करना वा पापों की क्षमा के लिये जल में बपतिस्मा लेने को अनावश्यक समझा। उनके विचारानुसार प्रभु की इन आज्ञाओं को मानना केवल एक ऊपरी दिखावा है, और इनसे हमारे उद्धार का कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु, सच्चाई यह है, कि आरम्भ से ऐसा नहीं था। उदाहरण के रूप से हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के २ अध्याय में देखते हैं कि जब लोगों ने यीशु के चेलों से पूछा कि हम उद्धार पाने के लिये क्या करें, तो विश्वासियों की इस बड़ी भीड़ से उन्हों ने कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" इसी तरह से शाऊल के बारे में हम देखते हैं, कि प्रभु के सुसमाचार का प्रचारक उसके पास आकर कहता है, "अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों २२ : १६)। अब यदि आरम्भ में लोगों को अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये या पाप को धो डालने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक था, तो क्या आज हमें उद्धार प्राप्त करने के लिये प्रभु की आज्ञा का पालन करना आवश्यक नहीं है ? सो यदि कोई यह कहता है, कि मनुष्य का उद्धार केवल विश्वास से हो सकता है, तो वह एक नए सुसमाचार का प्रचार करता है। परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था !

बपतिस्मे के ही बारे में दो बातें और महत्त्वपूर्ण हैं जिनका यहां

देख लेना अच्छा होगा। पहिले तो यह, कि आजकल बालकों को बपतिस्मा देने की प्रथा बड़ी ही आम बन गई है। जब किसी परिवार में, जो ईसाई कहलाता है, एक बालक का जन्म होता है तो माता-पिता उसके बपतिस्मे की चिन्ता करने लगते हैं, और जहां बालक दो चार महीने का हुआ तो वे उसे ले जाकर उसका बपतिस्मा करवा लेते हैं। यह प्रथा यूं तो आज काफ़ी पुरानी हो चुकी है, परन्तु वास्तव में आरम्भ से ऐसा नहीं था। बपतिस्मा देने की आज्ञा प्रभु यीशु मसीह ने दी थी, और उस ने यूं कहा था, कि पहिले लोगों को सुसमाचार प्रचार किया जाए, और जब वे सुनकर विश्वास ले आएं तो उन्हें बपतिस्मा दिया जाए। (मत्ती २८ : १९; मरकुस १६ : १५, १६)। उस ने कहा, "कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा"। सो न तो छोटे बालक विश्वास कर सकते हैं कि उन्हें बपतिस्मा दिया जाए, और न ही उन्हें उद्धार की आवश्यकता है, क्योंकि नन्हें मासूम बच्चे अच्छाई वा बुराई से अनजान हैं। वास्तव में यह बात बड़ी ही शोकजनक है कि आज हजारों और शायद लाखों लोग इस भ्रम में हैं कि उन्हों ने बपतिस्मा लेकर प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन कर लिया है। जबकि सच्चाई यह है, कि उन्हों ने प्रभु की आज्ञा अनुसार उसकी आज्ञा को नहीं माना है।

पुराने नियम में हम एक जगह देखते हैं, कि जब नादाब और अबीहू नाम के दो याजकों ने परमेश्वर की आज्ञानुसार बेदी पर से आग न लेकर एक ऊपरी आग का इस्तेमाल यहोवा की उपासना में किया, तो परमेश्वर ने उन्हें तुरन्त मृत्यु दन्ड दिया। (लैव्य० १०)। यहां से हम सीखते हैं कि परमेश्वर अपनी आज्ञाओं में कितना सख्त है। और फिर इब्रानियों की पत्री का लेखक यूं कहता है, "जबकि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता था। तो सोच लो कि वह और भी

कितने भारी दन्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा·····जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।" (इब्रानियों १० : २८-३१)। मित्रो, यह बात बड़ी ही गम्भीर है कि आप प्रभु की आज्ञाओं को किस प्रकार से मानते हैं।

इसी सम्बन्ध में एक दूसरी बात का उल्लेख करके मैं यहां यह बताना चाहता हूं, कि आजकल जल छिड़ककर बपतिस्मा देने की विधि बड़ी ही लोकप्रिय बनती चली जा रही है। परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था। सर्व प्रथम तो हम यह देखते हैं, कि बपतिस्मा शब्द का अभिप्राय ही किसी वस्तु के भीतर गाड़े जाने से है। सो इसे दृष्टिकोण में रखकर, यह कैसे सम्भव हो सकता है कि किसी व्यक्ति के ऊपर जल की कुछ बूंदे छिड़क दिए जाने से उसका बपतिस्मा हो जाए? इसके अतिरिक्त, इस सम्बन्ध में बाइबल की कुछ आयतें इस प्रकार हैं :

रोमियों ६ अध्याय में प्रेरित पौलुस कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" फिर एक और स्थान पर हम यूं पढ़ते हैं, "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।" (कुलुस्सियों २ : १२)।

यहां से हम देखते हैं, कि बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य दफ़न होता है, गाड़ा जाता है। अर्थात् जब मनुष्य बपतिस्मे के जल के भीतर गाड़ा जाता है तो वह यीशु मसीह की मृत्यु और उसके गाड़े जाने की

समानता में हो जाता है। और इसी प्रकार, जब वह बपतिस्मा लेकर जल में से बाहर निकलता है तो वह मसीह के जी उठने की समानता में हो जाता है। और इस तरह से उस मनुष्य का नया जन्म होता है। प्रभु यीशु का यही तात्पर्य था जब उसने एक जगह यूं कहा, कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से जन्म लेकर नए सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना ३ : ३, ५)।

पहली शताब्दि में जितने भी लोग मसीही बने उन सभों ने प्रभु की इस आज्ञा का यूं ही पालन किया। इस सम्बन्ध में अन्य शिक्षाओं का सिखाया वा माना जाना बहुत ही बाद में आरम्भ हुआ। परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था!

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि आप प्रभु की आज्ञाओं को उसकी इच्छानुसार ही मानने का प्रयत्न करेंगे। प्रभु अपने वचन अनुसार चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

८

कोई अपने आपको धोखा न दे

मित्रो :

आईए, परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए हम अपने आज के पाठ के ऊपर विचार करें। पवित्र वचन कहता है, "कोई अपने आपको धोखा न दे : यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आपको ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने; कि ज्ञानी हो जाए।" (१ कुरिन्थियों ३ : १८)। अकसर समय-समय पर हम में से हर एक धोखा खा जाता है। परन्तु सब से खराब धोखा वह है जो हमें स्वयं अपने आप से होता है, अर्थात् जब हम स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं। और आज हम अपनी ही शिक्षा के लिये इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने जा रहे हैं, क्योंकि धोखा एक ऐसी भयानक वस्तु है जिस के कारण हम अपनी आत्मा की भी हानि उठा सकते हैं।

सबसे पहिले, इस विषय में, हम देखते हैं कि मनुष्य उस समय अपने आपको धोखा देता है जब वह अपने आपको धर्मी समझने लगता है, अर्थात् जब हम यह स्वीकार नहीं करते कि हम पापी वा अधर्मी हैं तो हम अपने आपको धोखा देते हैं। पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "यदि हम

कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं।" (१ यूहन्ना १ : ८)। इसी तरह, जब हम अपनी ही गलतियों वा कमियों पर कोई ध्यान न देकर, अन्य लोगों के भीतर दोष देखने लगते हैं, तो हम अपने आपको इस तरह धोखा देते हैं जैसा कि प्रभु यीशु ने कहा कि "तू क्यों अपने भाई के आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता ? और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला, मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं ? हे कपटी पहिले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली-भांति देखकर निकाल सकेगा।" (मत्ती ७ : ३-५)। इसमें कोई संदेह नहीं, कि यदि हम अपना मन खोजकर देखें तो हमें कहीं न कहीं कोई दोष प्रवश्य मिलेगा। परन्तु मनुष्य अकसर अपनी बुराइयों को नज़र-अन्दाज़ करके दूसरों के भीतर दोष ढूंढ़ने का प्रयत्न करता है। वास्तव में, वह मनुष्य स्वयं अपने आपको धोखा देता है जो कहता है कि मुझ में कोई पाप या दोष नहीं। किन्तु, इस तरह से स्वयं अपने आप को धोखा देकर वह एक ऐसे मार्ग पर चल रहा है जिसका अन्त विनाश है। परमेश्वर का वचन कहता है, "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४ : १२)।

कुछ लोग सोचते हैं कि वे मनुष्यों की तरह परमेश्वर को भी धोखा दे सकते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को एक मनुष्य के समान समझते हैं। जब आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में पाप किया तो वे लाज के मारे अपने आप को एक दूसरे से छिपाने लगे, सो उन्हों ने सोचा कि वे इसी तरह परमेश्वर की दृष्टि से भी छिप सकते हैं। किन्तु, जब परमेश्वर ने आदम को पुकारा तो वह बिल्कुल

उसके पास खड़ा था। (उत्पत्ति ३)। पवित्र वचन का लेखक कहता है, "यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं। (नीतिवचन १५ : ३)।

क्योंकि मनुष्य मनुष्य को घूस दे सकता है तो वह सोचता है कि इसी प्रकार वह कदाचित परमेश्वर को भी घूस दे सकता है। जब परमेश्वर ने एक बार राजा शाऊल को यह आज्ञा देकर भेजा कि तू जाकर अमालेक देश में प्रत्येक वस्तु और हर एक प्राणी को नाश कर। तो शाऊल ने वहां जाकर सब कुछ तो नाश किया परन्तु अपने मन-पसन्द की कुछ वस्तुएं वह अपने साथ ले आया, जिन में कुछ अच्छे-अच्छे पशु इत्यादि भी थे। इस पर परमेश्वर ने अपने दूत को शाऊल से भेंट करने को मार्ग में भेजा। सो जब परमेश्वर के दूत ने शाऊल को परमेश्वर की आज्ञा याद दिलाकर उस से कहा कि तू क्यों प्रभु की आज्ञा तोड़कर इन पशुओं इत्यादि को अपने साथ ले आया है? तो शाऊल ने परमेश्वर के दूत को उत्तर देकर कहा, कि देख ये पशु इत्यादि तो मैं तेरे परमेश्वर को ही भेंट चढ़ाने के लिये लेकर आया हूं। दूसरे शब्दों में, शाऊल अपने पाप को छिपाने के लिये परमेश्वर को घूस देना चाहता था। परन्तु परमेश्वर के दूत ने शाऊल से कहा, कि परमेश्वर मनुष्य की लाई भेटों से नहीं परन्तु अपनी आज्ञा के माने जाने से प्रसन्न होता है। (१ शमूएल १५)।

परन्तु बहुतेरे लोग आज शाऊल की ही तरह परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के स्थान पर, प्रार्थना करना या दान इत्यादि देना अधिक उचित समझते हैं, और इस प्रकार वे शाऊल की ही तरह अपने आप को धोखा दे रहे हैं। यशायाह भविष्यद्वक्ता के दिनों में परमेश्वर ने लोगों से कहा कि "तुम्हारे नए चांदों और नियत त्योहारों के मानने से मैं जी से बैर रखता हूं; वे सब मुझे बोझ जान पड़ते

हैं, मैं उनको सहते-सहते उकता गया हूं। जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर लूंगा; तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो, तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा; क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे हैं। अपने को धोकर पवित्र करो; मेरी आंखों के सामने से अपने बुरे कामों को दूर करो; भविष्य में बुराई करना छोड़ दो, भलाई करना सीखो; यत्न से न्याय करो, उपद्रवी को सुधारो; अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का मुकद्दमा लड़ो। यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें : तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान सफेद हो जाएंगे। यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो, तो इस देश के उत्तम-उत्तम पदार्थ खाओगे; और यदि तुम न मानो और बलवा करो, तो तलवार से मारे जाओगे, यहोवा का यही वचन है।" (यशायाह १ : १४-२०)।

यहां हम देखते हैं, कि लोग अपने आपको धर्मी ठहराने के लिये, तरह-तरह से परमेश्वर को घूस दे रहे थे; वे नियत त्योहारों को मना रहे थे; प्रार्थनाएं कर रहे थे; और दान इत्यादि दे रहे थे। परन्तु परमेश्वर ने कहा, कि मुझे इन सब से कोई प्रसन्नता नहीं, किन्तु मैं इन से घृणा करता हूं। क्योंकि तुम मेरी आज्ञाओं को नहीं मानते, तुम अपने पापों वा बुराईयों से अपना मन नहीं फिराते।

जी नहीं, हम परमेश्वर की आज्ञाओं के मानने के स्थान पर उसे धन्यवाद वा बलिदान नहीं चढ़ा सकते। परन्तु वह कहता है, कि यदि हम अपना मन फिराएं, और उसकी सब आज्ञाओं को मानें तो वह हमारे प्रत्येक पाप को क्षमा करेगा और हमें आशीषों से भरपूर करेगा। सो इसलिये कोई मनुष्य यह सोचकर अपने आप को धोखा न दे, कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानकर उसे किसी अन्य वस्तु के

द्वारा प्रसन्न कर सकता है। परन्तु वास्तव में, हमारे सारे भलाई वा धर्म के काम परमेश्वर के सामने मैले चिथड़ों के समान हैं। परमेश्वर का भक्त यशायाह कहता है "हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं; और हमारे धर्म के काम सब के सब मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के सब पत्ते की नाईं मुर्झा जाते हैं, और हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु की नाईं उड़ा दिया है।" (यशायाह ६४ : ६)। ऐसा कौन-सा भलाई या धर्म का काम है जिसके द्वारा हम अपने आपको धर्मी ठहराकर परमेश्वर से उद्धार प्राप्त कर सकते हैं ? क्योंकि हमारे धर्म के सब काम उसके सामने मैले चिथड़ों के समान हैं।

परन्तु परमेश्वर हम से प्रेम करता है, वह हमें पाप के अनन्त दन्ड से बचाना चाहता है, वह हमारी आत्मा का उद्धार करना चाहता है। और वह कहता है, कि यदि तुम अपने सब अधर्म वा पाप से अपना मन फिराओ और मेरी सब आज्ञाओं को मानो, तो तुम्हारे पाप चाहे कितने भी बड़े या घिनौने क्यों न हों मैं उन्हें क्षमा करुंगा और तुम्हें अपनी आशीषों से भरपूर करुंगा।

परमेश्वर ने हमारे पापों से हमारा उद्धार करने के लिये अपने एकलौते पुत्र यीशु को इस पृथ्वी पर भेजा। उसने हमारे सारे पापों के लिये अपने पुत्र को दोषी ठहराकर उसे क्रूस के ऊपर बलिदान करवाया। और अब वह चाहता है, जैसा कि उसने हमें अपने वचन में बताया है, कि प्रत्येक मनुष्य उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करे कि वह हमारे पापों के कारण मारा गया। और परमेश्वर चाहता है कि हर एक मनुष्य पाप से अपना मन फिराए, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार जल में बपतिस्मा ले। (यूहन्ना ३ : १६; प्रेरितों २ : ३८; १७ : ३०, ३१)।

अकसर लोग परमेश्वर की आज्ञा मानने में देर करते हैं, वे सोचते

हैं कि वे फिर कभी उचित समय पर उसकी आज्ञा का पालन कर लेंगे। परन्तु कल के ऊपर अपना भरोसा रखकर मनुष्य अपने आपको धोखा दे रहा है। पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल किसी नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्यौपार करके लाभ उठाएंगे। और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा : सुन तो लो तुम्हारा जीवन है ही क्या ? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।" (याकूब ४ : १३, १४)।

मित्रो, आज का जैसा अवसर शायद आपके जीवन में फिर कभी न आए। मेरी आशा है कि आप आज ही अपना मन फिराकर प्रभु की आज्ञा मानने का निश्चय करेंगे। उसी का वचन आपकी आत्मा की अगुवाई करे।

९

वे क्यों नाश हुए ?

मित्रो :

यद्यपि संसार में अधिकांश लोग परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं, और किसी न किसी रूप में धार्मिक भी कहलाते हैं, किन्तु केवल विश्वास या किसी रूप में धार्मिक होने के आधार पर ही मनुष्य स्वर्ग के राज्य मे प्रवेश न करेगा। शायद कोई अच्छे-अच्छे काम करता हो, प्रार्थना करता हो, और धार्मिक होने का दावा करता हो, किन्तु तौभी यह सम्भव है कि वह परमेश्वर के राज्य के योग्य न ठहरे। यद्यपि भले काम करना, और प्रार्थना करना, और धार्मिक स्वभाव रखना यह सब बड़ा ही अच्छा है, किन्तु मनुष्य का उद्धार केवल इसी कारण नहीं होगा। मेरे विचार में अपने इस विषय को प्रमाणित करने के लिये सबसे अच्छा यह होगा कि हम प्रभु यीशु के इन शब्दों पर ध्यान दें। उस ने कहा, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम

नहीं किए ? तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा," प्रभु ने कहा, "कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ। इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान की नाईं ठहरेगा। जिस ने अपना घर चटान पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें, आईं और आंधियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चटान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आंधियाँ चली, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती ९ : २१-२७)।

यहां, प्रभु के इस कथन में, हमें न्याय के दिन की एक झलक दिखाई गई है। निःसंदेह, क्योंकि प्रभु सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञानी है, इस कारण वह भूत और भविष्य का पूर्ण ज्ञान रखता है। और इसलिये वह भविष्य में होनेवाले न्याय को साक्षात देखकर बता सकता है कि उस दिन बहुतेरे लोग स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के दृष्टिकोण से उस से क्या-क्या कहेंगे। सो उस ने कहा, कि उस दिन बहुतेरे लोग मुझ से कहेंगे, कि प्रभु हमारा उद्धार कर, क्योंकि हम हमेशा तेरा नाम लेते रहे हैं, हम ने तेरे नाम में प्रार्थनाएं की हैं, और तेरे नाम के कारण बड़े-बड़े धर्म के काम किए हैं। परन्तु प्रभु ने कहा कि तब मैं उन से कह दूंगा कि तुम मेरे सामने से दूर हो जाओ, तुम्हारे सारे के सारे काम मेरे सामने बुराईयों के समान हैं, क्योंकि तुम ने मेरी बताई हुई बातों को नहीं माना और जो आज्ञा मैं ने दी थी उसे नहीं माना।

वास्तव में, स्वर्ग या नरक में प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपनी ही इच्छा

से जाएगा। क्योंकि प्रभु नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नाश हो परन्तु वह चाहता है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। (२ पतरस ३ : ९)। परन्तु हर एक मनुष्य को अपनी ही इच्छा से चुनना है कि उसे कहां जाना है। हमें यह निश्चय करना है कि क्या हम अपनी ही इच्छा अनुसार धर्म के काम करके वा अच्छा जीवन बिताकर स्वर्ग में जाने का प्रयत्न करेंगे, या हम प्रभु की इच्छा मानकर उसके राज्य में प्रवेश करेंगे। परमेश्वर ने हर एक मनुष्य को यह अधिकार दिया है कि वह अपनी ही इच्छा से अपने आनेवाले जीवन के लिये घर तैयार करे। परन्तु यह कर्त्तव्य मनुष्य का है कि वह अपना घर बालू पर बनाता है या चट्टान पर।

इच्छा के विषय पर विचार करते हुए, हमारा ध्यान तीन प्रकार के लोगों के ऊपर जाता है। अर्थात्, कुछ लोग तो ऐसे होते हैं जिनका व्यवहार इस प्रकार का होता है कि वे सदा अपनी ही इच्छा अनुसार चलना चाहते हैं, वे कहते हैं कि हमारी ही इच्छा सब बातों में पूरी हो। और यहां तक कि वे कई बार अपनी ही इच्छा को परमेश्वर की इच्छा मानकर उसे पूरा करना चाहते हैं। दूसरी ओर, कुछ लोग ठीक स्वभाव के होते हैं। अर्थात्, वे अपनी इच्छा के सामने परमेश्वर की इच्छा को कोई महत्त्व नहीं देते, वे सदा परमेश्बर की इच्छा के सामने से भागने का प्रयत्न करते रहते हैं। किन्तु, बहुत ही थोड़े लोग इस प्रकार के होते हैं जो परमेश्वर की इच्छा को जानने के बाद अपनी इच्छा पर चलना छोड़कर परमेश्वर की इच्छा पर चलने लगते हैं।

इन बातों से सम्बन्धित सबसे पहिला उदाहरण हम बिलाम का ले सकते हैं। बिलाम को परमेश्वर ने बालाक नाम के एक राजा के

पास जाने को मना किया था, क्योंकि बालाक बिलाम से वह काम करवाना चाहता था जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध था। यद्यपि बिलाम एक धार्मिक व्यक्ति था, तौभी राजा की प्रतीज्ञा अनुसार ढेर सारा रुपया पैसा मिलने के लालच में आकर बिलाम ने अपने मन में यह ठान लिया कि वह राजा के पास अवश्य जाएगा। और इसी इच्छा को लेकर वह प्रार्थना में परमेश्वर के सम्मुख आया। किन्तु जब परमेश्वर ने जान लिया कि बिलाम के मन की इच्छा क्या है, तो परमेश्वर ने उस से कहा, कि ठीक है, तू जा। और इस तरह बिलाम ने अपनी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा समझकर पाप किया। (गिनती २२)। आज भी कितने ही लोग प्रभु के पीछे आना तो चाहते हैं, परन्तु वास्तव में वे उसके पीछे अपनी ही इच्छा अनुसार चलना चाहते हैं। किन्तु प्रभु कहता है कि "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के कारण अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।" (मरकुस ८ : ३४, ३५)। सो परमेश्वर के राज्य में हम अपनी ही इच्छानुसार धर्मी ठहरकर प्रवेश नहीं कर सकते। परन्तु हमें अपनी इच्छाओं से और अपने आप से इन्कार करना है और परमेश्वर की इच्छा को अपने जीवनों में प्रथम स्थान देना है। क्या हम ऐसा करने के लिये तैयार हैं? प्रभु ने कहा, कि यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो उसे ऐसा ही करना आवश्यक है।

दूसरी ओर, कुछ लोग योना की तरह परमेश्वर की आज्ञाओं के सामने से भागते हैं। योना भी बिलाम की तरह ही एक धार्मिक पुरुष था। परन्तु जब परमेश्वर ने योना को आज्ञा देकर कुछ लोगों के पास भेजा, तो वह उन लोगों के डर के मारे

परमेश्वर की आज्ञा के सामने से भागा। और यूं योना ने परमेश्वर की इच्छा टालकर पाप किया। कितने ही लोग आज भी इसी तरह से परमेश्वर की आज्ञाओं को टालकर उसके विरुद्ध पाप करते हैं। वे योना की तरह लोगों से डरते हैं। परन्तु प्रभु कहता है कि "जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।" यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं के सामने मनुष्य की आज्ञाओं को न मानें तो मनुष्य हमें दुख पहुंचा सकता है, और अधिक से अधिक वह हमारे शरीर को घात कर सकता है। परन्तु यदि हम मनुष्यों से डरकर परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानें, तो मित्रो परमेश्वर वह है जो शरीर और आत्मा दोनों को नाश कर सकता है। इसीलिये पवित्र वचन का लेखक कहता है कि "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।" (इब्रानियों १० : २५)।

सो यदि हम अपनी आत्मा को नाश होने से बचाना चाहते हैं; यदि हम परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन पाना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम अपनी इच्छा से बढ़कर अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को पहिला स्थान दें। हमें चाहिए कि मनुष्यों से डरने के विपरीत परमेश्वर से डरना सीखें और मनुष्यों की आज्ञाओं के सामने प्रभु की आज्ञाओं को प्रथम स्थान दें। और हमें चाहिए कि यदि हम देखते हैं कि हम परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं चल रहे हैं, परन्तु हम अपनी इच्छानुसार या अन्य लोगों की इच्छा अनसार चल रहें हैं, तो हम अपनी और लोगों की इच्छा अनुसार चलना छोड़कर परमेश्वर की इच्छानुसार चलने का निश्चय करें। इस बात को हम शाऊल के जीवन से देखते हैं। शाऊल भी एक धार्मिक व्यक्ति था, वह एक बड़ा

ही कट्टर यहूदी था, और यहां तक कि बाइबल हमें बताती है कि वह मसीही धर्म को सहन नहीं कर सकता था। उसने मसीह की कलीसिया को यहां तक सताया कि जितने भी मसीही लोगों पर वह हाथ डाल सका, उसने उन सबको जेल-खानों में डाल दिया, उसने उन पर अत्याचार किए और बहुतेरों को मरवा डाला। परन्तु उसी शाऊल ने जब सत्य को पहिचाना, तो उसने प्रभु पर विश्वास किया और अपने पापों से पश्चात्ताप किया और अपने पापों को धो डालने के लिये प्रभु की आज्ञा अनुसार बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों ९; २२: १-१६)। आज उसी शाऊल को हम प्रेरित पौलुस के नाम से जानते हैं। एक जगह वह अपनी गवाही देकर यूं कहता है, "मैं तो पहिले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे।" (१ तीमुथियुस १ : १३)। और फिर एक जगह वह कहता है कि "मैं ने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए। और मैं ने यरुशलेम में ऐसा ही किया; और महायाजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को बन्दीग्रह में डाला, और, जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उनके विरोध में अपनी सम्मति देता था। और हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था, यहां तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया, कि बाहर के नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था।" (प्रेरितों २६ : ९-११)। परन्तु, अब, वह शाउल बदल चुका था, क्योंकि अपनी इच्छानुसार चलना छोड़कर उसने प्रभू की इच्छा के अनुसार चलने का निश्चय कर लिया था। सो एक स्थान पर वह कहता है कि "जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।" (फ़िलिप्पियों

३ : ७) । कितना बड़ा बदलाव हम शाऊल के जीवन में देखते हैं !

मित्रो, मेरी आशा और विश्वास है कि आज आप भी अपने जीवन में इस बात का निश्चय करेंगे, कि भविष्य में आप अपनी या लोगों की इच्छानुसार चलना छोड़कर, केवल प्रभु की इच्छानुसार ही चलेंगे और शाऊल की तरह हर एक आज्ञा का पालन करेंगे ।

१०

मूर्खता के कारण

मित्रो :

यह अवसर वास्तव में बड़ा ही सुन्दर वा महत्त्वपूर्ण है, और यदि हम बुद्धिमान हैं तो हम इस अवसर का अवश्य ही लाभ उठाएंगे। परमेश्वर का भक्त एक जगह कहता है, "सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेंढ़ों की चर्बी से उत्तम है।" (१ शमूएल १५ : २२)। सो मेरी आशा है कि आप परमेश्वर के वचन को ध्यान लगाकर सुनेंगे। पवित्र वचन का एक लेखक कहता है, "हे देश, देश के लोगों, यह सुनो ! हे संसार के सब निवासियो, कान लगाओ !" "विपत्ति के दिनों में जब मैं अपने अड़ंगा मारनेवालों की बुराईयों से घिरूं, तब मैं क्यों डरूं ? जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते, और अपने धन की बहुतायत पर फूलते हैं, उनमें से कोई अपने भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता है ; और न परमेश्वर को उसकी सन्ती प्रायश्चित में कुछ दे सकता है, (क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती भारी है, वह अन्त तक कभी न चुका सकेंगे)। कोई ऐसा नहीं जो सदैव जीवित रहे, और कब्र को न देखे। क्योंकि देखने में आता है, कि बुद्धिमान भी मरते हैं, और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी दोनों

नाश होते हैं, और अपनी सम्पत्ति औरों के लिए छोड़ जाते हैं। वे मन ही मन यह सोचते हैं, कि उनका घर सदा स्थिर रहेगा, और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे, इसलिये वे अपनी-अपनी भूमी का नाम अपने-अपने नाम पर रखते हैं। परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी स्थिर नहीं रहता, वह पशुओं के समान होता है, जो मर मिटते हैं। उनकी यह चाल उनकी मूर्खता है, तौभी उसके बाद लोग उनकी बातों से प्रसन्न होते हैं। वे अधोलोक की मानो भेड़-बकरियां ठहराए गए हैं; मृत्यु उनका गड़रिया ठहरी; और बिहान को सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे; और उनका सुन्दर रूप अधोलोक का कौर हो जाएगा और उनका कोई आधार न रहेगा। परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा, क्योंकि वही मुझे ग्रहण कर अपनाएगा। जब कोई धनी हो जाए और उसके घर का विभव बढ़ जाए, तब तू भय न खाना। क्योंकि वह मरकर कुछ भी साथ न ले जाएगा ; न उसका विभव उसके साथ कब्र में जाएगा। चाहे वह जीते जी अपने आपको धन्य कहता रहे, तौभी वह अपने पुरखाओं के समाज में मिलाया जाएगा, जो कभी उजियाला न देखेंगे। मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान हैं जो मर मिटते हैं।" (भजन संहिता ४९)।

मित्रो, ये सारी बातें जो अभी हम ने देखीं कितनी अधिक सच और विचारपूर्ण हैं। किन्तु बुद्धिमान लेखक यहाँ जिस महत्त्वपूर्ण बात की ओर हमारा ध्यान दिलाना चाहता है वह यह है, कि कितने ही लोग अपना भरोसा परमेश्वर और सच्चाई पर से हटाकर अपने ऊपर और संसार की झूठी बातों पर भरोसा रखने लगते हैं, और उनका अन्त कैसा शोकपूर्ण होगा। क्योंकि वे एक मूर्ख की नाईं संसार से चले जाते हैं। और आज मैं आपका ध्यान इस बात की ओर

दिलाना चाहता हूं कि हम में से बहुतेरे आज भी अपना जीवन मूर्खता-पूर्ण व्यतीत कर रहे हैं।

पवित्र वचन के अनुसार, "मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं।" (भजन० १४ : १)। सो वह मनुष्य जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखता, जो उस से नहीं डरता और उसकी नहीं मानता वह वास्तव में मूर्ख है। "क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी। सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।" (रोमियों १४ : ११,१२)। सो यदि कोई मनुष्य परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखता, तो न्याय के दिन वह अपनी मूर्खता से अवश्य ही परिचित हो जाएगा। क्योंकि उस दिन हर एक जुबान परमेश्वर के नाम का अंगीकार करेगी। और हर एक जन यह जान लेगा कि "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।" (इब्रानियों १० : ३१)।

परन्तु न केवल वे ही लोग मूर्ख हैं जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखते, परन्तु बहुतेरे परमेश्वर पर विश्वास रखनेवाले भी मूर्खों के समान हैं। क्योंकि वे परमेश्वर का ज्ञान रखकर भी अज्ञानता से उसे मानते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि

मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।" (रोमियों १ : १८-२३)। सो यहां हम ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जो परमेश्वर का ज्ञान तो अपने मनों में अवश्य रखते थे, और उसकी अराधना वा उपासना भी करते थे, परन्तु वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर का अनुसरण उसके बताए हुए मार्ग अनुसार नहीं किया, परन्तु उन्हों ने उसकी स्वर्गीय महिमा को संसार की नाशमान वस्तुओं में बदल डाला। और इस प्रकार उनकी भक्ति वा उपासना बिल्कुल व्यर्थ ठहरी, क्योंकि उन्हों ने सत्य को अधर्म से दबा डाला। क्या आज भी बहुतेरे लोग ठीक ऐसे ही नहीं हैं ?

फिर, पवित्र बाइबल हमें बताती है कि वे लोग जो प्रभु के वचन को सुनते तो रहते हैं परन्तु उस पर अमल नहीं करते, वे उस मूर्ख व्यक्ति के समान हैं जिसने अपना घर बालू रेत पर बनाया और नेव कच्ची होने के कारण उसका घर जल्द ही गिरकर सत्यानाश हो गया। प्रभु यीशु ने कहा, "इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आंधियां चलीं, और उस घर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आंधियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती ७ : २४-२७)। सो यहां से हम देखते हैं, कि हर एक मनुष्य जो प्रभु के वचन को सुनता है, वह हर

बार इस प्रकार उसके वचन को सुन सुनकर अपने घर में ईंटें लगा रहा है। और प्रभु ने कहा कि वह जो मेरी बातों को सुनकर उन्हें मानता है वह इस तरह अपना घर चट्टान पर बना रहा है परन्तु वह जो मेरे वचन को सुनता तो है परन्तु मानता नहीं वह इस प्रकार अपना घर बालू पर बना रहा है, और न्याय के दिन उसका घर स्थिर न रह पाएगा परन्तु गिरकर सत्यानाश हो जाएगा। और वास्तव में, आज बहुतेरे लोग इसी प्रकार अपनी आत्मा के लिये घर तैयार कर रहें। लूका १६ अध्याय में हम दो व्यक्तियों के बारे में पढ़ते है, जो अपनी अपनी मृत्यु के बाद अपने-अपने सदा के घर को पहुंचे। और हम देखते लाज़र नाम का व्यक्ति जबकि परमेश्वर के लोगों के साथ स्वर्ग में शान्ति पा रहा था, दूसरी ओर वह दूसरा मनुष्य जो पृथ्वी पर धनवान सेठ कहलाता था अधोलोक में ज्वाला में तड़प रहा था। निः-संदेह वे दोनों ठीक उसी जगह पहुंचे जहां-जहां जाने का निश्चय उन्हों ने पृथ्वी पर अपने जीवनों में किया था। परन्तु वह मनुष्य वास्तव में मूर्ख है जो समझ नहीं रखता और इस जीवन में अपना घर चटान पर नहीं बनाता।

बात वास्तव में यह है, कि अकसर बहुतेरे लोग इस सच्चाई से अपनी आंखें फेर लेते हैं, कि यह संसार किसी भी मनुष्य का हमेशा का घर नहीं है, और हरएक मनुष्य अवश्य ही इस नाशमान संसार से अलग होकर एक दिन उस जगह पहुंचेगा जो उसकी आत्मा का अनन्त निवास होगा। संसार की अभिलाषाएं, धन और विभव इत्यादि वस्तुएं मनुष्य की आंखो पर ऐसा परदा डाल देती हैं कि वह आने-वाले जीवन की सच्चाई को भूलकर अपने वर्तमान जीवन को ही सब कुछ समझने लगता है। परन्तु मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं, कि प्रभु यीशु ने इसी प्रकार के एक मनुष्य का दृष्टान्त देकर कहा, "कि किसी धनवान की भूमी में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में

विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उसने कहा; कि मैं यह करुंगा; मैं अपनी बखारियां तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊंगा ; और वहां अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा : आर अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; कि हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा : तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा ?" और यह दृष्टान्त देकर प्रभु ने कहा, कि "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है परन्तु परमेश्वर की दृष्टी में धनी नहीं।" (लूका १२ : १६-२१)।

सो हम देखते हैं कि वह मनुष्य वास्तव में बड़ा मूर्ख था। वह समझता था कि उसके पास सब कुछ है, किन्तु सच्चाई यह है कि उसके पास कुछ भी न था। क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पति की बहुतायत से नहीं होता। परन्तु खेद-जनक बात यह है कि संसार में आज भी बहुतेरे लोग इसी प्रकार संसार की वस्तुओं पर अपना भरोसा रखकर अपनी आत्मा को सदा के लिये खो रहे हैं। वे अपने सांसारिक जीवन को सुरक्षित बनाने के लिये परिश्रम वा प्रयत्न कर रहे हैं, जबकि उनका आत्मिक जीवन असुरक्षित है।

मित्रो, हमें चाहिए कि हम अपना भरोसा संसार और संसार की वस्तुओं पर से हटाकर परमेश्वर पर रखें, और अपनी आत्मा को सुरक्षित करने के लिये उसकी मानें। परमेश्वर चाहता है कि हर एक मनुष्य उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करे, और संसार से अपना मन फिराए, और अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये प्रभु के नाम से बपतिस्मा ले, और उसकी आज्ञाओं पर चलकर अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करे। सो मेरा विश्वास है कि आप अवश्य ही बुद्धिमानी वा गम्भीरता के साथ इन बातों के ऊपर विचार करेंगे।

११

चौकस रहो !

मित्रो :

यूं तो हमारे जीवन में बहुतेरे ऐसे अवसर आते हैं जिनके कारण हम बड़े प्रसन्न होते हैं, परन्तु मेरे लिए इस से बढ़कर आनन्द की और कोई बात नहीं कि इस अवसर पर मैं आपका ध्यान परमेश्वर और उसके वचन और उसके प्रति आपके कर्त्तव्य की ओर दिलाऊं। क्योंकि मेरा यह विश्वास है कि संसार और उसकी सारी शोभा घास के फूल की नाईं है जो कुछ देर के लिए खिलता और फिर मुरझा जाता है, परन्तु परमेश्वर का वचन और वे जो उस वचन पर चलते हैं सर्वदा बने रहेंगे। सो यदि आप अपने जीवन के उद्देश्य में सफल होना चाहते हैं, तो पवित्र बाइबल के इन शब्दों को ध्यान से सुनें, लेखक कहता है, "तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों

मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (यूहन्ना २:१५-१७)।

यहां हम देखते हैं, कि मनुष्य को परमेश्वर की ओर से यह आदेश मिला है कि कोई भी मनुष्य न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखे, क्योंकि कोई भी मनुष्य जो संसार और उसकी वस्तुओं से प्रेम रखता है, उस में पिता के प्रति प्रेम नहीं हो सकता, अर्थात् कोई भी मनुष्य संसार और परमेश्वर से एक साथ प्रेम नहीं रख सकता। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा कि "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (मत्ती ६:२४)। इस बात को हम उस धनी नवयुवक के जीवन से प्रत्यक्ष देखते हैं, जिसने एक बार प्रभु के पास आकर अपनी इस प्रबल इच्छा को व्यक्त किया कि वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाना चाहता है। परन्तु प्रभु के यह कहने पर कि तू अपना सारा माया-मोह छोड़कर मेरे पीछे हो ले और तुझे स्वर्ग में सब कुछ मिल जाएगा, हम देखते हैं कि वह नवयुवक प्रभु के सामने से उदास होकर चला गया। (मत्ती १९ : १६-२२)। यहां यह व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में तो प्रवेश करना चाहता था किन्तु अपने साथ संसार और उसकी वस्तुओं को भी उसके भीतर ले जाना चाहता था। परन्तु यदि कोई संसार और उसकी वस्तुओं से प्रेम रखता है तो उसमें परमेश्वर और उसके राज्य के प्रति प्रेम नहीं हो सकता। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड वह परमेश्वर की ओर से नहीं है, परन्तु संसार ही की ओर से है, और इसलिए संसार, और उसकी वस्तुएं, और उसकी अभिलाषाएं, और वे सब जो उनके अनुसार चलते हैं एक दिन अवश्य ही नाश होंगे, परन्तु वे जो परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं, वे परमेश्वर के राज्य में सर्वदा बने रहेंगे।

सो शरीर की अभिलाषा क्या है? प्रेरित पौलुस कहता है,

"शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्त्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और-और काम हैं" प्रेरित कहता है कि "इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कहे देता हूं, जैसे पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" (गलतियों ५ : १९-२१)। और इसी तरह वह एक और जगह यूं कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्त्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६ : ९, १०)। सो ये सब काम शरीर के काम हैं, ये शरीर की अभिलाषाओं के द्वारा किए जाते हैं, और ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश न करेंगे।

परन्तु, जो कुछ संसार की ओर से है उसमें न केवल शरीर की अभिलाषा का ही वर्णन है परन्तु आँखों की अभिलाषा भी उस में सम्मिलित है। आंखों की अभिलाषा का सबसे अच्छा उदाहरण देखने के लिए यदि हम हव्वा, अर्थात् प्रथम स्त्री के उदाहरण को देखें तो अधिक अच्छा होगा। हम देखते हैं कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बाटिका में लगे बीच के वृक्ष के फल को खाने को सख्त मना किया था, और उन्हें यह चेतावनी दी थी कि जिस दिन वे उसे खाएंगे तो वे परमेश्वर की आज्ञा तोड़कर पापी बन जाएंगे, और मर जाएंगे, अर्थात् परमेश्वर की उपस्थिति में से निकाले जाएंगे। परन्तु शैतान ने अवसर पाकर हव्वा के भीतर उसकी आँखों की अभिलाषा को जागृत किया। उसने उसके पास आकर कहा, कि क्या परमेश्वर ने बाटिका में लगे किसी वृक्ष के फल को खाने को तुम्हें मना किया है ? और हव्वा

के यह कहने पर, कि हां, परमेश्वर ने हमें यह आदेश दिया है, कि न तो तुम उसको खाना, और न उसको छूना नहीं तो मर जाओगे। शैतान ने हव्वा से कहा, नहीं, यह बात झूठ है, तुम निश्चय न मरोगे, परन्तु परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। सो हम देखते हैं कि यह सुनकर स्त्री के भीतर उसकी आँखों की अभिलाषा जाग उठी, लिखा है कि उसने उस फल की ओर देखा और अनुभव किया कि वह फल देखने में सुन्दर और मनभाऊ और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तो उसने उस में से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया। और यूं आँखों की अभिलाषा में फंसकर हव्वा और आदम ने पाप किया।

मित्रो, शैतान जानता है कि मनुष्य के भीतर उसकी आँखों की अभिलाषा बड़ी ही प्रबल वस्तु है। और इसीलिए हमारे सामने वह प्रत्येक पाप को बड़ा ही सुन्दर और मनभाऊ बनाकर पेश करता है। और साथ ही वह हमें यह आश्वासन भी देता है कि यदि हम उसे करेंगे तो हमें कुछ भी हानि न होगी, परन्तु हमारा जीवन और अधिक प्रसन्न और आनन्दमय बन जाएगा। किन्तु आदम और हव्वा ने शैतान के इस बड़े झूठ की वास्तविकता को एक बहुत बड़ा दाम देकर सीखा। परमेश्वर ने उन्हें स्राप देकर अपनी उपस्थिति में से निकाल दिया, और उन्हों ने अपना आत्मिक जीवन खो दिया। और आज भी इसी प्रकार बहुतेरे लोग अपनी आत्मा का दाम देकर शैतान के इस बड़े झूठ की प्रतीति कर रहे हैं।

परन्तु न केवल शरीर और आंखों की अभिलाषा के ही कारण, किन्तु बहुतेरे जीविका के घमन्ड के कारण भी अपने प्राणों को खो रहे हैं। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से

अपने आपको बचाए रखो : क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।" (लूका १२:१५)। बहुतेरे लोगों का जीवन केवल उनकी जीविका पर ही केन्द्रित होता है। उनके पास अपनी आत्मा की आवश्यकता पर ध्यान देने का कोई समय नहीं होता। उनके पास परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए कोई समय नहीं होता। उनका जीवन केवल उनकी जीविका है। उनका घमन्ड और उनकी आशा केवल उनकी जीविका है। परन्तु मित्रो, प्रभु ने कहा, "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो : क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।" और फिर उसने उस मनुष्य का दृष्टान्त दिया जिसका दृष्टिकोण इसी प्रकार का था, जो अपनी जीविका पर अत्यन्त घमन्ड करता था, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह एक मूर्ख था। प्रभु ने कहा, कि वह मनुष्य बड़ा ही धनवान था, और वह अपने धन की बहुतायत पर फूले नहीं समाता था। एक बार जब उसके यहां बहुत बड़ी उपज हुई, तो उसने अपने मन में कहा कि अब तो मुझे जीवन में किसी भी वस्तु की कोई आवश्यकता नहीं, अब तो मेरे पास इतना है कि जीवन भर चैन और सुख से आनन्द करूंगा। परन्तु प्रभु ने आगे कहा, कि उसी दिन परमेश्वर की ओर से उसे यह संदेश मिला, कि अरे मूर्ख, तेरे दिन तो पहिले ही गिने जा चुके हैं, देख, तेरे प्राण तो आज ही रात तुझसे ले लिए जाएंगे, फिर ये जो कुछ तू ने जीवन भर बटोरा है जिस पर तुझे इतना घमन्ड और आशा है, ये तब तेरे किस काम आएंगे ? (लूका १२)।

मित्रो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि जो कुछ संसार में हैं, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आँखों की अभिलाषा, और जीविका का घमन्ड, ये सभी वस्तुएं एक दिन संसार के साथ ही नाश हो जाएंगी। क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है कि "उस दिन आकाश बड़ी ही हड़-हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल

जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।" (२ पतरस ३:१०)। परन्तु जबकि इन सभी वस्तुओं का इस प्रकार नाश होने-वाला है, पवित्र वचन कहता है, कि जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा। सो इन बातों को ध्यान में रखकर, हमारे लिए यह कितना आवश्यक है कि हम अपना ध्यान सभी अन्य बातों पर से हटाकर इस बात पर विचार करें कि क्या हमने परमेश्वर की आज्ञाओं को माना है ? मैं एक बार फिर से आपको संक्षिप्त में बताना चाहता हूं कि परमेश्वर की इच्छा आपके लिए क्या है :

परमेश्वर चाहता है कि आप उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करें, और पाप से अपना मन फिराएं, और फिर अपने पापों की क्षमा के लिए प्रभु के आदेश अनुसार बपतिस्मा लेकर उसके बताए हुए मार्ग पर चलें।

परमेश्वर आपको अपने वचन पर चलने की सामर्थ दे।

१२

क्या आप अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये तैयार हैं ?

मित्रो :

हमारे प्रति दिन के दैनिक जीवन में तैयारी का एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह बात मेरे ध्यान में उस समय आई जब मैं आज सुबह अपने एक मित्र के घर गया। लगभग सारा ही परिवार अपनी-अपनी तैयारी करने में व्यस्त था। छोटे बच्चे स्कूल जाने के लिये जल्दी-जल्दी तैयार हो रहे थे, उनकी माता रसोई घर में नाश्ता आदि तैयार करने में व्यस्त थीं, और मेरे मित्र अपने काम पर जाने की तैयारी कर रहे थे। यही बात हमें लगभग सभी परिवारों में देखने को मिलती हैं। अर्थात् लगभग सभी मनुष्य किसी न किसी प्रकार की तैयारी करने में व्यस्त रहते हैं। कोई अपने दफ़तर जाने की तैयारी में है, तो कोई परीक्षा में बैठने की तैयारी कर रहा है। कोई घर जाने की तैयारी कर रहा है, तो कोई बाहर जाने की तैयारी कर रहा है। अर्थात्, मनुष्य का अधिकांश जीवन किसी न किसी प्रकार की तैयारी करने में ही व्यतीत होता है। और इन सब बातों पर विचार करते हुए, मेरा ध्यान इस बात पर गया कि हम में से कितने लोग आज अपने

आप को अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये तैयार कर रहे हैं ? और एकाएक मेरा ध्यान भविष्यद्वक्ता आमोस के उन शब्दों की ओर गया जहां वह कहता है, "अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये तैयार हो जा।" (आमोस ४ : १२)।

यह एक सच्चाई है, कि जिस प्रकार आज हम जीवित हैं, हम में से प्रत्येक एक दिन अवश्य ही इस संसार को छोड़कर जाएगा और उसके बाद हर एक मनुष्य का न्याय होगा। क्योंकि परमेश्वर का वचन चेतावनी देकर यूं कहता है कि "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ९ : २७)। और परमेश्वर यूं भी कहता है कि "मेरे जीवन की सौगंध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा और हर एक जीभ परमेश्वर का अंगीकार करेगी। सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा।" (रोमियों १४ : ११,१२)। किन्तु यदि यह सच है, तो क्या हम में से हर एक अपना-अपना लेखा देने के लिये तैयार है? क्या हम में से हर एक अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये तैयार है ? जी नहीं, यह प्रश्न इतना अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है, कि क्या आप अपने दफ्तर या स्कूल जाने के लिये तैयार हैं ? या यह कि क्या आप अपनी परीक्षा में बैठने के लिये या अपने सफ़र को करने के लिये तैयार हैं ? परन्तु सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक प्रश्न जो आज हम में से हर एक के लिये है वह यह है, कि क्या हम अपने परमेश्वर के सामने आकर अपना लेखा देने के लिये तैयार हैं ? मैं चाहता हूं कि इस समय आप सब कुछ भूलकर इस प्रश्न पर पूरी गम्भीरता के साथ विचार करें कि क्या आप अपने परमेश्वर के सामने आने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं ? जी हां, मैं आपसे कह रहा हूं, क्या आप तैयार हैं ?

प्रेरित पौलुस कहता है, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-

अपने भले बुरे कामों का बदला, जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२ कुरिन्थियों ५ : १०)। और फिर एक और जगह लिखा है कि "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७ : ३०,३१)। परन्तु मित्र, क्या आप तैयार हैं ?

तैयारी के महत्त्व को न हम मनुष्यों के बीच ही देखते हैं परन्तु परमेश्वर के निकट भी तैयारी का बड़ा महत्त्व है। जब मनुष्य ने परमेश्वर के पीछे चलना छोड़कर पाप किया, तो परमेश्वर ने मनुष्य को फिर से अपनी संगति में लाने के लिये, उसका उद्धार करके उसे बचाने के लिये एक मार्ग तैयार किया। और इस तरह, हम देखते हैं कि उसने मनुष्य को बचाने के लिये अपने एकलौते पुत्र को इस संसार में भेजा, और सारे मनुष्यों के पापों के कारण उसे पापी ठहराकर उसे पाप का दन्ड दिया। और फिर उसने कहा कि अब मेरे पुत्र पर विश्वास करो, उसकी सुनो, क्योंकि उसने तुम्हारा बोझ उठा लिया और तुम्हारा कर्ज़ा चुका दिया; अब तुम उसके द्वारा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करके मेरी संगति में फिर से वापस आ सकते हो। इसी कारण, प्रभु यीशु मसीह ने एक जगह कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना ६ : १४)। सो परमेश्वर ने आवश्यकतानुसार मनुष्य के उद्धार के मार्ग को तैयार किया है, और हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम परमेश्वर के तैयार किए उस मार्ग पर चलकर परमेश्वर के पास पहुंचने के लिये अपने आप को तैयार करें। अब, शायद आप यह जानना चाहें, कि मैं किस प्रकार से परमेश्वर की इच्छानुसार चलकर अपने आप को तैयार

कर सकता हूं ? तो सुनिये, परमेश्वर का वचन बड़े ही सीधे-साधे शब्दों में हमें बताता है, कि हर एक मनुष्य को चाहिए कि वह यीशु मसीह में विश्वास करे कि वह मेरे पापों के कारण मुझे बचाने के लिये बलिदान हुआ इसलिये वह मेरा उद्धार कर सकता है। फिर, परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि हम में से हर एक अपने-अपने पापों से अपना मन फिराए, अर्थात् यह निश्चय करे कि अब मैं अपना आगे का जीवन पाप में नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करने के लिए ही व्यतीत करुंगा। और फिर परमेश्वर अपने वचन के द्वारा कहता है, कि जब हम उसके पुत्र पर विश्वास करके पाप से अपना मन फिरा लें तो हमें चाहिए कि हम सब अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें, अर्थात बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर, प्रभु के नाम से, अपने पुराने जीवन को हमेशा के लिये गाड़ दें। और इस प्रकार नया जन्म प्राप्त करके, परमेश्वर कहता है कि अब हम अपना आगे का जीवन उसकी इच्छानुसार व्यतीत करें, जिसे उसने हमारे ऊपर पुत्र के द्वारा प्रगट किया है। (यूहन्ना ३ : १६,३६; मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८; यूहन्ना ३ : ३,५; इब्रानियों १ : १,२; ५:८,९; २ तीमुथियुस ४ : ७,८)।

सो जब हम प्रभु की आज्ञा मानकर अपने आपको इस प्रकार तैयार कर लेते हैं, तो हमें यह आश्वासन होता है कि अब हम अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये पूर्ण रूप से तैयार हैं। और हम पूरे हियाव के साथ, प्रेरित पौलुस की तरह, यूं कह सकते हैं, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, बरन उन सबको भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमुथियुस ४ : ७,८)। निःसंदेह, कोई भी मनुष्य जो वास्तव में

तैयार नहीं है इस प्रकार नहीं कह सकता।

परन्तु क्या आप जानते हैं कि प्रभु यीशु अपने उन लोगों को लेने के लिये जो तैयार हैं एक दिन वापस आ रहा है ? पवित्र बाइबल हमें बताती है कि जब वह अपने उद्देश्य को पूरा करके स्वर्ग को वापस जानेवाला था तो उसने अपने चेलों से कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊँगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" (यूहन्ना १४ : १-३)।

परन्तु मित्रो, जबकि प्रभु के आने पर बहुतेरे लोग तो बिल्कुल भी तैयार न होंगे, किन्तु बहुतेरे ऐसे भी होंगे जिनकी तैयारी अधूरी होगी, अर्थात् जिन्होंने प्रभु की कुछ बातों को अपने जीवन में सुनकर टाल दिया होगा, और इस तरह वे उसके साथ जाने को पूरी तरह तैयार न होंगे। और निःसंदेह, वे प्रभु के साथ कदापि न जा सकेंगे। क्या आप सुन रहे हैं ? इस विषय में प्रभु यीशु ने चिताकर एक जगह यूं कहा :

"तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। उनमें पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। मूर्खों ने अपनी मशालें तो ली, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं। आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिये चलो। तब वे सब कुवांरियां

उठकर अपनी-अपनी मशालें ठीक करने लगीं। और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।" और, "जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया। इसके बाद वे दूसरी कुवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे। उसने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।" और तैयारी का यह उदाहरण देने के बाद, प्रभु यीशु ने कहा, "इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को।" (मत्ती २५ : १-१३)।

मित्रो, मुझे बड़ी ही प्रसन्नता है कि परमेश्वर ने हमें यह बहू-मूल्य अवसर दिया कि हम उसकी इच्छा को जानें और अपने आपको उसके सामने आने के लिये तैयार करें। यदि आपने उसकी आज्ञाओं की ओर अब तक ध्यान नहीं दिया है, तो मेरी आशा है कि अब आप इस ओर अवश्य ही ध्यान देंगे और उन्हें मानेंगे। और इस प्रकार आप अपने परमेश्वर के सामने आने के लिये अपने आपको तैयार करेंगे। उसी का वचन आपकी आत्मा की अगुवाई करे।

१३

पूर्वद्वेष—एक समस्या

मित्रो :

इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि संसार में मनुष्य की सबसे गम्भीर समस्या पाप है। परन्तु पाप कई प्रकार का होता है, अर्थात् कई तरह से किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, जैसे कि हम देखते हैं, कि आरम्भ में कैन ने परमेश्वर की इच्छानुसार उसकी उपासना न करके परमेश्वर के विरुद्ध ढिठाई का पाप किया, और फिर कुछ ही देर बाद उसने क्रोध में आकर अपने भाई हाबिल की हत्या कर दी और इस प्रकार उसने ईर्ष्या का पाप किया। पाप परमेश्वर की आज्ञाओं को टालकर किया जा सकता है, उसकी आज्ञाओं में बदलाव लाकर किया जा सकता है, या उसकी आज्ञाओं में कुछ भी जोड़कर या उनमें से कुछ भी घटाकर किया जा सकता है। किन्तु आज हम एक ऐसे पाप के बारे में देखेंगे जो मनुष्यों में बड़ा ही प्रचलित है, और वह है पूर्वद्वेष का पाप।

पूर्वद्वेष का अर्थ है पहिले से किसी वस्तु या किसी जन के बारे में कोई विचार अपने मन में बना लेना। जैसे कि मान लीजिए, किन्हीं

दो पक्षों में किसी तरह का कोई मत-भेद या झगड़ा उत्पन्न हो जाता है, तो हम देखते हैं कि वे दोनों ही पक्ष अपने-अपने मनों में एक-दूसरे के प्रति कुछ निश्चित धारणाएं बना लेते हैं, और फिर वे एक-दूसरे के साथ उन्हीं पूर्व बनाई धारणाओं के आधार पर व्यवहार करते हैं। और यहां तक देखने में आता है, कि यदि एक पक्ष दूसरे पक्ष के पास कुछ अच्छे विचार लेकर भी जाए तो वह दूसरा अपने मन की पूर्व धारणाओं के कारण उन अच्छे विचारों को भी अस्वीकार कर देता है। इसी को पूर्वद्वेष कहते हैं।

पूर्वद्वेष के कारण ही आज संसार में बहुतेरे लोग एक-दूसरे को अपना शत्रु समझते हैं। संसार के कई भागों में काले वा गोरे का मत-भेद है, और हम सब जानते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में ही हज़ारों लोगों को केवल इसीलिये अपने प्राणों को खोना पड़ा क्योंकि उनका रंग कुछ अन्य लोगों की चमड़ी के रंग से भिन्न था। और इस कारण वे उन्हें पसन्द नहीं करते थे, और अपने मन के पूर्वद्वेष के कारण उन्हों ने उनकी हत्या कर दी। फिर, ऊंच-नीच का पूर्वद्वेष है। कुछ लोग अपने आपको दूसरे लोगों से ऊंचा समझते हैं, और इस कारण वे उन से बैर वा ईर्ष्या रखते हैं, वे उन पर अत्याचार करते हैं। और क्या हमारे हीं देश में इस प्रकार की घटनाएं नहीं घटतीं ? पूर्वद्वेष वास्तव में मनुष्य की एक बड़ी ही गम्भीर समस्या है।

परन्तु पूर्वद्वेष की समस्या इस पृथ्वी पर कोई नई नहीं है। आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसे भी इस समस्या का इसी प्रकार सामना करना पड़ा। लोग उसे कहते थे कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, यदि तू धर्मी है; तो फिर तू क्यों पापियों के संग-संगति करता है, क्यों उनके साथ उठता-बैठता वा खाता है। वे चाहते थे कि यीशु उन्हीं की तरह उन लोगों से परे रहे परन्तु यीशु ने कहा, कि मैं सब खोए हुए लोगों को ढूंढ़ने और पापियों

का उद्धार करने के लिये आया हूं। वास्तव में प्रभु यीशु के पृथ्वी पर आने का उद्देश्य केवल मनुष्य को परमेश्वर के साथ मिलाने का ही नहीं था। परन्तु उसका उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य के साथ मिलाने का भी था। और इसीलिये पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।" (गलतियों ३ : २६-२८)। प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि हम सब आपस में एक-दूसरे से अपने समान प्रेम रखें, जैसे कि उसने हम सब से प्रेम रखा और हमें बचाने के कारण अपने आप को दे दिया।

किन्तु पूर्वद्वेष की समस्या न केवल ऊंच-नीच, रंग, विद्या और भाषा तक ही सीमित है, परन्तु धार्मिक दृष्टिकोण से भी पूर्वद्वेष एक बड़ी ही संगीन समस्या है। वास्तव में धार्मिक पूर्वद्वेष के कारण ही प्रभु यीशु को संसार में अनेकों प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ा। यद्यपि वह परमेश्वर का "वचन" था किन्तु तौभी उसकी शिक्षाओं को ग्रहण नहीं किया गया, क्योंकि लोगों के मनों में पहिले ही से कुछ और प्रकार की धार्मिक धारणाएं समा चुकी थीं। सो हम देखते हैं, कि जब वह उन्हें अपनी अद्भुत सामर्थ से हर प्रकार की बीमारी से चंगा करता था और उन्हें भोजन खिलाकर तृप्त करता था, तो भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो लेती थी, परन्तु जब वह उन्हें उपदेश देता था तो उन में से कई कहने लगते थे, कि यह बात नागवार है इसे कौन सुन सकता है। (यूहन्ना ६)। और हम देखते हैं कि इसी प्रकार के धार्मिक पूर्वद्वेष के कारण ही कुछ लोग यीशु के कट्टर शत्रु बन गए, और उन्हों ने उसे मार डालने की योजना बनाई, और उसे क्रूस का दन्ड दिलवाया।

फिर हम प्रेरित पौलुस के बारे में भी पढ़ते हैं, कि एक मसीही बनने से पहिले वह स्वयं धार्मिक पूर्वद्वेष से भरा था। वह स्वयं एक जगह अपनी गवाही यह कहकर देता है कि "मैं तो पहिले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अन्धेर करनेवाला था; तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे।" (१ तीमुथियुस १ : १३)। वह कलीसियाओं में घुस जाता था और मसीही लोगों पर बड़े अत्याचार करवाता था, और उन पर झूठे दोष लगाकर उन्हें बन्दीगृह में डलवा देता था। जब सुसमाचार के प्रचारक स्तिफ़नस को लोग धार्मिक पूर्वद्वेष के कारण पत्थरवाह करके मार रहे थे, तो हम पढ़ते हैं कि वह भी उन्हीं के साथ शामिल था।

परन्तु, आज भी इसी तरह बहुतेरे लोग अपने मनों के पूर्वद्वेष के कारण मसीह और उसकी कलीसिया और उसकी शिक्षाओं को ठीक से नहीं समझते और नहीं मानते। बहुतेरे लोगों के लिये आज यीशु मसीह एक मनुष्य से बढ़कर कुछ भी स्थान नहीं रखता। वे उसे परमेश्वर का पुत्र स्वीकार नहीं करते, वे उसे अपना उद्धारकर्त्ता नहीं मानते। परन्तु क्या उसका अद्भुत जन्म, उसके सामर्थपूर्ण काम जो उसने पृथ्वी पर रहकर किए, उसके बे-मिसाल उपदेश और शिक्षाएं, उसकी बलिदान-रूपी मृत्यु, और उसका मुर्दों में से जी उठना, क्या ये सब इस बात का प्रमाण नहीं है कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, क्या यह सचमुच में इस बात का प्रमाण नहीं है कि वह हमारा उद्धारकर्त्ता है ? कौन है जो नए नियम में इन सब बातों के बारे में पढ़ने के बाद भी इस सच्चाई से इन्कार कर दे ? परन्तु वे लोग जो इन बातों को नहीं मानते वे ऐसा केवल अपने मनों के पूर्वद्वेष के कारण ही करते हैं। उन्हों ने कुछ पूर्वद्वेषी लोगों के द्वारा मसीह के बारे में केवल कुछ-कुछ सुना है, परन्तु वे स्वयं नहीं जानते कि सच्चाई क्या है। किन्तु, मेरा दावा है कि यदि कोई भी व्यक्ति नए नियम को पूरी गम्भीरता के साथ पढ़े तो उसे यह मानने में देर नहीं लगेगी कि सच-

मुझ में यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह मेरा उद्धारकर्त्ता है।

इसी तरह, बहुतेरे लोग मसीह की कलीसिया को नहीं समझते। वे कहते हैं, "मसीह की कलीसिया", यह तो कोई नई कलीसिया है। वास्तव में, उन्हों ने वर्षों से बहुतेरी कलीसियाओं के नामों के बारे में सुना है, और इस कारण उनके मनों में यह धारणा बन चुकी है कि ये ही वास्तव में कलीसियाएं हैं। और जब उन्हें मसीह की कलीसिया के बारे में बताया जाता है, तो वे कहते हैं कि यह कोई नई चीज़ है! परन्तु मैं आपसे पूछता हूं, कि बाइबल में आप कौन-सी कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं? किस की कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं? क्या आप अपनी कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं? क्या आप अपने मित्र या किसी सम्बन्धी की कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं? कौन-सी कलीसिया के बारे में आप पढ़ते हैं? क्या मसीह ने नहीं कहा, मत्ती १६ : १८ में, कि मैं **अपनी** कलीसिया बनाऊंगा? तो फिर कलीसिया किस की हुई? क्या मसीह की नहीं हुई? सो पौलुस एक जगह अपने मसीही भाईयों को लिखकर कहता है कि "तुमको **मसीह की** सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों १६ : १६)। सो यदि आज संसार में भिन्न-भिन्न नामों से कहलानेवाली कलीसियाएं विद्यमान् हैं तो इसका अभिप्राय यह नहीं है कि उन सभी का बनानेवाला मसीह है। क्योंकि उसने कहा, कि **मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा**। सो आज यदि लोग मसीह की कलीसिया के बारे में नहीं समझते तो इसका कारण उनके मनों का पूर्वद्वेष, उनकी पूर्ण धारणाएं हैं।

परन्तु यदि आप नए नियम को पढ़ेंगे, तो मेरा विश्वास है कि आप भी यह मान लेंगे कि उद्धार वास्तव में मसीह की कलीसिया में ही है। क्योंकि मसीह की कलीसिया उन लोगों की मंडली है जिनका मसीह की आज्ञा मानने के कारण उद्धार हुआ है। प्रेरितों २ अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि जब लोगों को यह आज्ञा दी गई की मन फिराओ,

और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो उनमें से तीन हज़ार लोगों ने बपतिस्मा लिया, और लिखा है कि प्रभु ने उन्हें मन्डली में मिला लिया। और इसी तरह आज भी जो लोग यीशु में विश्वास करते हैं और अपना मन फिराकर उसमें बपतिस्मा लेते हैं, यीशु उनका उद्धार करता है और उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लेता है।

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि यदि आपके मन में आज किसी भी प्रकार का पूर्वद्वेष है, तो आप उसे दूर करके सच्चाई को स्वीकार करेंगे। प्रभु यीशु ने कहा, कि तुम सच्चाई को जानोगे तो सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (यूहन्ना ८ : ३२)।

१४

नए नियम की उपासना

मित्रो :

इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारा परमेश्वर वास्तव में बड़ा ही दयालू और अनुग्रही पिता है। पवित्र बाइबल का एक लेखक परमेश्वर के विषय में कहता है, "जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चन्द्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले ?" (भजन ८ : ३,४)। और वास्तव में यह बात बिल्कुल सच है कि जब हम परमेश्वर की शक्ति, सामर्थ वा उसकी महानता के ऊपर विचार करते हैं तो हम अपने भीतर कोई भी ऐसा गुण या योग्यता नहीं पाते जिनके कारण हम अपने आपको परमेश्वर के किसी भी योग्य समझें। परन्तु तौभी जहां हम यह देखते हैं कि परमेश्वर अपनी शक्ति और सामर्थ में महान् है वहां वह अपनी दया वा अनुग्रह में भी अपार है।

इसी कारण, हम देखते हैं, कि यद्यपि मनुष्य पापी, अधर्मी, अपवित्र और अयोग्य है, तौभी परमेश्वर ने मनुष्य से इतना अधिक प्रेम रखा कि उसने मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलवाकर उसे धर्मी,

पवित्र, और योग्य बनाने के लिये अपने एकलौते पुत्र यीशु को बलिदान कर दिया। और न केवल उसने इतना ही किया परन्तु परमेश्वर ने आत्मिक बातों में हमें सिद्ध करने के लिये अपना वचन भी दिया है। बाइबल परमेश्वर का वचन है। इस पुस्तक में परमेश्वर के उपदेश, आदेश और उसकी इच्छा वा आज्ञाएं सब कुछ हमारे लिये उपलब्ध हैं। बाइबल के बारे में एक जगह लिखा है कि "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (२ तीमुथियुस ३ : १६,१७)।

बाइबल न केवल हमें इतना ही बताती है, कि परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिये अपने पुत्र को इस संसार में मरने के लिये भेजा, परन्तु बाइबल हमारा ध्यान इस बात पर भी दिलाती है कि हम किस प्रकार से उसके पुत्र यीशु के बलिदान के द्वारा उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। सो बाइबल बताती है कि प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह यीशु मसीह में विश्वास करे, और अपने पापों से पश्चात्ताप करें, और यीशु का अंगीकार करके अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। और फिर बाइबल हमारा ध्यान इस बात के ऊपर दिलाती है, कि इस प्रकार उद्धार प्राप्त करने के बाद मनुष्य को चाहिए कि वह अपने बचानेवाले परमेश्वर की आराधना वा उपासना करे। इस बात का एक उदाहरण हमें बाइबल में इस प्रकार मिलता है कि जब आरम्भ में लोगों ने प्रभु के सुसमाचार को सुना, तो लिखा है, "सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में, और रोटी तोड़ने में, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों २ : ४१, ४२)। यहां हम देखते हैं, कि वे लोग बपतिस्मा लेने के तुरन्त ही बाद

से प्रभु की उपासना करने में लौलीन हो गए। अर्थात् वे प्रेरितों से उपदेश सुनने में, और आपस में संगति रखने में, और रोटी तोड़ने अर्थात् प्रभु भोज लेने में, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमें बताता है कि आज वह हमसे किस तरह की उपासना चाहता है। और यदि हम वास्तव में उसे प्रसन्न वा सम्मानित करने के लिये उस की उपासना करना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है, कि हम आज उसकी उपासना केवल उसी की इच्छानुसार करें। यह बात कुछ और होती यदि वह हमें उपासना करने के लिये कहता, परन्तु उपासना करने की विधि को हम पर प्रगट न करता। तब हम उसकी उपासना अपनी इच्छानुसार, जैसे कि हम चाहते, कर सकते थे। परन्तु क्योंकि परमेश्वर ने बड़े ही निश्चित ढंग से अपने वचन में हमें बताया है कि आज हमें उसकी उपासना कैसे करनी चाहिए, तो हमें कोई अधिकार नहीं कि हम उसकी इच्छा में कोई बदलाव लाकर उसकी उपासना करें। और यदि हम ऐसा करते हैं, तो हम यह भी याद रखें कि इस प्रकार की उपासना को परमेश्वर कभी भी स्वीकार न करेगा। इस बात को और भी निश्चित ढंग से बताने के अभिप्राय से परमेश्वर ने हमें दो बड़े ही शिक्षाप्रद उदाहरण अपने वचन में दिये हैं। अर्थात् कैन और नादाब वा अबीहू के। हम देखते हैं, कि कैन की उपासना को परमेश्वर ने इसलिये स्वीकार नहीं किया क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं थी। जबकि नादाब और अबीहू को परमेश्वर ने उस समय भारी दन्ड दिया जब उन्होंने उपासना में उसकी इच्छा को बदलकर अपनी इच्छानुसार परमेश्वर की उपासना करने का प्रयत्न किया।

सो इन सब बातों को ध्यान में रखकर, हमारी इच्छा यह जानने की होनी चाहिए कि आज परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा उपासना के बारे में हमें क्या आदेश दिए हैं। इस सम्बन्ध में सर्व प्रथम तो हमें

यह याद रखना चाहिए कि बाइबल में हमें परमेश्वर के दो नियम मिलते हैं। अर्थात्, एक पुराना नियम और एक नया नियम। प्रगट ही है, कि पुराना नियम पूर्व लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा थी, और नया नियम वर्तमान लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा है। अर्थात् पुराने नियम में परमेश्वर ने अपनी इच्छा को उन लोगों के लिये प्रगट किया था जो यीशु मसीह के इस पृथ्वी पर आने तक के समय तक रहे। परन्तु यीशु मसीह की मृत्यु के बाद उसका नया नियम अर्थात् नई इच्छा की स्थापना हुई, और इसलिये आज हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा जो कुछ भी है उसे हम पूर्णरूप से नए नियम में पढ़ते हैं। (मत्ती २६ : २६-२८; इब्रानियों ९ : १६,१७)। सो इसलिये आज हमारी उपासना पूर्ण रूप से नए नियम के अनुसार ही होनी चाहिए।

नए नियम के आदेशानुसार, हम देखते हैं कि आज परमेश्वर के लोगों को उसकी उपासना करने के लिये सप्ताह के पहिले दिन अर्थात् रविवार के दिन एकत्रित होना चाहिए। इसका मुख्य कारण यह है, कि अपनी मृत्यु के बाद सप्ताह के पहिले दिन प्रभु यीशु मुर्दों में से जी उठा। (मरकुस १६ : १-८)। सो इसलिये जब हम प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन एकत्रित होते हैं तो हम प्रभु के जी उठने की याद को भी मनाते हैं। और न केवल प्रभु के जी उठने की याद को ही परन्तु प्रभु-भोज में भाग लेकर हम उसकी मृत्यु और उसके दोबारा आने का भी प्रचार करते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, "क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है : मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा; यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है : जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम

यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए प्रचार करते हो।" (१ कुरिन्थियों ११ : २३-२६)।

फिर हम पढ़ते हैं, नए नियम में, कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक कहता है कि "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।" (प्रेरितों २० : ७)। अर्थात् जब हम सप्ताह के पहिले दिन प्रभु भोज में भाग लेने के लिये एकत्रित होते हैं तो हमें प्रभु का उपदेश सुनना चाहिए। और इसी प्रकार, नए नियम में हम पढ़ते है कि सप्ताह के पहिले दिन हमें अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार प्रभु के कार्य के लिये चन्दा या दान इकट्ठा करना चाहिए। (१ कुरिन्थियों १६ : १,२)। फिर, नया नियम हमें सिखाता है, कि हमें निरन्तर प्रार्थना में लगे रहना चाहिए। (१ थिस्सलुनीकियों ५ : १७)। सो जब हम प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन प्रभु की इच्छानुसार उसकी उपासना करने के लिये एकत्रित हों तो हमें चाहिए, कि हम प्रभु भोज में भाग लें, और अपना-अपना चन्दा इकट्ठा करें, और प्रभु का उपदेश सुनें, और प्रार्थना करें, और इसी तरह नया नियम हमें यह भी सिखाता है कि हम प्रभु की स्तुति करने के लिये भजन वा आत्मिक गान गाएं। लिखा है, "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।" (इफिसियों ५ : १९)। परन्तु यहां इस बात को याद रखें कि क्योंकि नए नियम में हमें केवल गाने का ही आदेश दिया गया है, इसलिये जब हम प्रभु की स्तुति में आत्मिक गीत गाते हैं तो हमें किसी भी प्रकार के बाजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। क्योंकि यदि हम ऐसा करेंगे तो हम प्रभु की आज्ञा में बदलाव लाने या उस की आज्ञा में जोड़ने के लिये दोषी

ठहरेंगे। इस सिद्धांत की पुष्टि करने के लिये नए नियम में एक और जगह यूं लिखा है, "इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें।" (इब्रानियों १३ : १५)।

सो मेरा विश्वास है कि हमारा आज का यह महत्त्वपूर्ण पाठ आप सब के लिये बड़ा ही लाभदायक सिद्ध होगा। परमेश्वर चाहता है कि हम सब यीशु मसीह के द्वारा अपना मेल उसके साथ कर लें, और फिर उसकी इच्छानुसार उसकी भक्ति वा उपासना करके अपने जीवन से उसके नाम की बड़ाई वा महिमा करें। परमेश्वर आपको आशीष दे।

१५

आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता क्यों है

मित्रो :

मैं सचमुच में अपने आपको बड़ा ही भाग्यशाली समझता हूं जबकि मैं इस बात पर ध्यान देता हूं कि आज "सत्य सुसमाचार" के प्रोग्राम को आरम्भ हुए लगभग तीन वर्ष हो चुके हैं, और इन तीन वर्षों में प्रभु ने मुझे अपने सुसमाचार को लोगों तक पहूंचाने के लिए रेडियो के इस माध्यम से निरन्तर इस्तेमाल किया है और मेरी अगुवाई वा सहायता की है। निःसंदेह, मैं प्रभु के इस बड़े अनुग्रह के लिए अत्यन्त आभारी हूं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस कार्यक्रम को निरन्तर हज़ारों और कदाचित लाखों लोग सुनते और सराहते हैं, और आपके पत्र निश्चय ही इस सत्य की पुष्टी करते हैं। परन्तु तौ भी आप में से बहुतेरे लोग इस बात पर अवश्य ही विचार करते होंगे कि मैं क्यों आपको बार-बार सुसमाचार की आज्ञाओं को पालन करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं, और विशेषकर बपतिस्मा लेने के लिये। शायद आप अपने

मन में कहते हों, कि मैं इन सब बातों पर विश्वास करता हूं, परन्तु मुझे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता क्यों हैं ? सो आईए, मैं आपको बपतिस्मा लेने के महत्त्व को बताऊं, और यह कि आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता क्यों है ।

सबसे बड़ी और मुख्य बात तो इस विषय में यह है, कि बपतिस्मा प्रभु की एक आज्ञा है । हम देखते हैं, कि मनुष्य के उद्धार की योजना को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद, अर्थात् अपनी मृत्यु और पुनःरुत्थान के बाद और स्वर्ग में वापस जाने के कुछ ही समय पूर्व, जब यीशु अपने चेलों को विशेष आदेश देने के अभिप्राय से अन्तिम बार उनसे मिला, तो उसने उनसे कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है । इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो । और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं ।" और, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा ।" (मत्ती २८ : १८-२०; मरकुस १६ : १६) । सो हम देखते हैं कि बपतिस्मा प्रभु की एक आज्ञा है, और इसका सम्बन्ध मनुष्य के उद्धार से उतना ही गहरा है जितना कि विश्वास का । इस वास्तविकता को हम इस बात में भी देखते हैं कि प्रभु ने विश्वास और बपतिस्मे को एक साथ उद्धार से पहिले रखा, अर्थात् उसने कहा, (१) कि जो विश्वास करे, (२) और बपतिस्मा ले, (३) उसी का उद्धार होगा । विश्वास के बारे में पवित्र बाइबल में लिखा है, कि विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है, (इब्रानियों ११ : ६), और बपतिस्मे के बारे में लिखा है कि बपतिस्मा हमें बचाता है । (१ पतरस ३ : २१)।

और अब मैं आपका ध्यान विशेष रूप से उन स्थानों पर दिलाना

चाहूंगा जहां हम देखते हैं कि लोगों ने यीशु के सुसमाचार को सुनकर तुरन्त बपतिस्मा लिया। अर्थात् यदि बपतिस्मा लेना उद्धार के लिए आवश्यक न होता, तो वे लोग, जिनके बारे में हम अभी देखने जा रहे हैं, उसी समय या उसी दिन बपतिस्मा लेने की आवश्यकता को अनुभव नहीं करते। सो इस विषय में सबसे पहिले हम उन लोगों के बारे में देखते हैं जिनकी संख्या लगभग तीन हज़ार थी। ये लोग अपना एक त्योहार मनाने के लिये यरुशलेम नगर में इकट्ठे हुए थे। परन्तु जब सभी लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त थे, तो बाइबल बताती है, कि एकाएक प्रभु ने अपने प्रेरितों के ऊपर कुछ अद्भुत चिन्ह प्रगट किए, और आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द लोगों को सुनाई पड़ा। प्रगट ही है, कि इस से लोगों के बीच में बड़ा कौतूहल-मच गया, और वे सब के सब प्रेरितों की तरफ़ आकृषित हुए, और उस ओर लपके जहां प्रेरित बैठे थे : जब लोगों की भीड़ लग गई, और वे सब चकित होकर इन सब बातों का अभिप्राय जानना चाहते थे, तो हम देखते हैं, कि प्रेरितों ने उन्हें बताया कि ये सब पवित्रशास्त्र में लिखी बातों के अनुसार प्रभु की ओर से है। और तब, उन्होंने उन लोगों को यीशु का सुसमाचार सुनाना आरम्भ किया। और बाइबल बताती है कि जब लोगों ने यह सुना कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को सारे लोगों के लिए बलिदान करके उसे मुर्दों में से जिलाया, और यीशु ने स्वर्ग में वापस जाने से पहिले यह आज्ञा दी है कि इस सुसमाचार को पृथ्वी के सारे लोगों को सुनाया जाए ताकि जो विश्वास करे वह उद्धार पाए। तो उन लोगों ने इन बातों को सुनकर विश्वास किया। उन्हें अपने पापों के कारण अपने मनों में बड़ा खेद हुआ, और उन्होंने प्रेरितों से पूछा, "कि हे भाईयो, हम क्या करें?" और तब हम यूं पढ़ते हैं कि "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा

तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा" सो जब लोगों ने इस आज्ञा को सुना, तो लिखा है, "सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।" (प्रेरितों २)। सो हम यहां क्या देखते हैं ? कब वे लोग प्रभु की मन्डली में मिल गए ? जब उन्होंने बपतिस्मा लिया। और उन्होंने बपतिस्मा क्यों लिया ? प्रगट ही है, जैसा कि हम पढ़ते हैं, अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए। परन्तु, उन्होंने कब बपतिस्मा लिया ? उसी दिन।

परन्तु प्रभु की इस बड़ी ही विशेष और अत्यन्त ही आवश्यक आज्ञा को आज कई तरह से तोड़-मरोड़कर और बड़े ही अनुचित ढंग से लोगों को सिखाया जा रहा है, और साधारण वा सीधे-साधे लोग इन अनुचित शिक्षाक्षों को मान भी रहे हैं। यह बात वास्तव में बड़ी ही खेद-जनक है। और विशेष रूप से इसलिए क्योंकि बपतिस्मे का सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा के उद्धार से है। और यह बात भी बड़े ही ध्यान देने योग्य है, कि क्योंकि इस आज्ञा को बड़े ही तोड़-मरोड़कर और बदलकर माना वा सिखाया जा रहा है, इसलिए बहुतेरे लोग इस विषय पर सच्चाई को सुनना भी पसन्द नहीं करते। बहुतेरे लोग कहते हैं कि हम बाइबल की अन्य सभी बातों पर प्रचार करें, परन्तु बपतिस्मे के बारे में कुछ न बोलें। किन्तु क्या बपतिस्मा बाइबल का विषय नहीं ? सो वे कहते हैं, कि हम बपतिस्मा के बारे में इतना अधिक प्रचार क्यों करते हैं ? मैं सोचता हूं कि आपका यह कहना बड़ा ही उचित है। क्योंकि वास्तव में हम अन्य सभी लोगों की तुलना में बपतिस्मे का प्रचार अधिक करते हैं। और इसका कारण यही है, कि क्योंकि लोग इस विषय पर अज्ञानता से भरपूर हैं। अब मान लीजिए, यदि मैं आपसे पूछूं कि अन्य देशों के अतिरिक्त हमारे ही देश

में परिवार नियोजन का प्रचार अधिक क्यों किया जाता है ? तो इसके उत्तर में क्या आप यह नहीं कहेंगे, कि क्योंकि हमारे देश के लोग अधिकांश रूप से परिवार नियोजन की सच्चाई से अज्ञान हैं ? सो हम बपतिस्मे के बारे में लोगों को बार-बार इसलिए बताते हैं ताकि लोग इस विषय में सच्चाई से परिचित हो जाएं।

अब कदाचित आप यह जानना चाहेंगे, कि बपतिस्मे के बारे में उचित और अनुचित क्या है ? सो उचित तो मैं आपको पहिले भी बता चुका हूं, अर्थात् जो प्रभु ने इस विषय पर कहा, और जिस प्रकार प्रेरितों के काल में लोगों ने इस शिक्षा को ग्रहण किया वा माना। परन्तु जो अनुचित है वह इस प्रकार है :

आज बड़े ही प्रचलित ढंग से कहा जाता है, कि उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक नहीं है परन्तु यह केवल एक चिन्ह है जो विश्वास को प्रगट करने के लिए **उद्धार पाने के बाद** आवश्यक है। जबकि बाइबल बताती है, कि प्रभु यीशु ने कहा कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा तब उसको उद्धार मिलेगा। फिर, लोगों को यह सिखाया जाता है कि वे अपने छोटे-छोटे बच्चों को बपतिस्मा दिलवाने के लिये लाएं। जबकि बाइबल बताती है, कि बपतिस्मा उन लोगों के लिए है जो विश्वास करेंगे और इस योग्य हों कि अपना मन फिरा सकते हैं। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)। परन्तु क्योंकि दो महीने का बालक न तो विश्वास कर सकता है और न मन फिरा सकता है, और तौ भी यदि मैं उसे बपतिस्मा दूं तो क्या मैं बाइबल की स्पष्ट शिक्षा का विरोध नहीं करता ? और फिर बाइबल बताती है, कि बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य जल के भीतर गाड़ा जाता है। एक जगह हम यूं पढ़ते हैं, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?

सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए।" (रोमियों ६ : ४; कुलुस्सियों २ : १२)। परन्तु बपतिस्मे के द्वारा गाड़े जाने के स्थान पर आज बहुतेरे लोग सिर के ऊपर जल की कुछ बूंदें ही छिड़ककर बपतिस्मा देते और ले लेते हैं। क्या यह अनुचित नहीं ?

फिर हम बहुतेरे लोगों को कहते सुनते हैं, कि उद्धार तो मेरा १९६८ में हुआ था, परन्तु बपतिस्मा मैंने १९७० में लिया ! परन्तु यह कैसे सम्भव हो सकता है ? जबकि प्रभु ने कहा कि उद्धार बपतिस्मा लेने के बाद ही होता है। और यही कारण था कि प्रेरितों के दिनों में जितने भी लोग सुसमाचार सुनते थे तो वे उसी दिन या उसी समय बपतिस्मा लेते थे। जैसा कि हमने पहिले ही एक उदाहरण में देखा कि तीन हज़ार लोगों ने उसी दिन बपतिस्मा लिया। फिर हम शाऊल, अर्थात् पौलुस के बारे में देखते हैं, कि जब उसने सुसमाचार सुना, और उसे यह आज्ञा दी गई कि "अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" तो उसने उठकर तुरन्त बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों २२ : १६; ९ : १८)। इसी प्रकार, हम पढ़ते हैं, कि जब खोजे ने यीशु का सुसमाचार सुना, तो उसने सुनते ही जल की ओर देखकर फिलिप्पुस से पूछा, कि अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है ? और हम देखते हैं कि फिलिप्पुस ने उसे उसी समय बपतिस्मा दिया। (प्रेरितों ८ : ३५-३९)। फिर आगे चलकर हम देखते हैं, कि जब बन्दीग्रह के एक दारोगा ने अपने घराने समेत प्रभु का वचन सुना तो उसने रात को उसी घड़ी अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों १६ : ३०-३४)।

सो क्या इन सब बातों से हम बपतिस्मा लेने के महत्त्व और

आवश्यकता को नहीं देखते ? मित्रो, मेरी आशा है कि इस विषय पर आपके जो भी पूर्व विचार या धारणाएं हैं आप उन सब को अपने से दूर करके प्रभु की आज्ञा को उसी की इच्छानुसार मानने का प्रयत्न करेंगे। यदि इस विषय में आप और अधिक जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो कृप्या हमारा पता नोट कर लें। प्रभु आपको सामर्थ दे कि आप उसके वचन पर चलनेवाले बनें।